सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 244, नई दिल्ली । गुरुवार, 14 नवम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अनुशासन एक ऐसा तरीका है जो उसमें कामयाब हो गया, वो हर कार्य में जीत सकता है।

03 दिल्ली की हवा देश में सबसे ज्यादा जहरीली

06 विज्ञान की प्रगति में चूहों का अहम योगदान है

08 बुलडोजर मामला : "अपराध की सजा घर तोड़ना नहीं : सुप्रीम कोर्ट, लगाई रोक

अगर आपका समय सीमा समाप्त वाहन जब्त किया गया है तो आप उसे कैसे छुड़वा सकते हैं जाने

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में जनता के समय सीमा समाप्त वाहनों को जब्त होने के बाद वापस प्राप्त करने के लिए परिवहन विभाग में वाहन मालिक जिसके नाम वाहन हैं निचे प्रदान किए गए लिंक पर क्लिक करके ऑनलाइन आवेदन सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

https://degs.org.in/TD/Default

यह लिंक सिर्फ परिवहन विभाग द्वारा जब्त किए वाहनों को वापस पाने के लिए है। दिल्ली यातायात पुलिस, एमसीडी, एनडीएमसी या दिल्ली कोनटेन्ट बोर्ड द्वारा जब्त वाहनों के लिए उनके क्षेत्राधिकारी को वाहन छोड़ने का अधिकार प्राप्त है उसके लिए आपको उस क्षेत्र के उसके विभाग के कार्यालय में संपर्क कर दस्तावेज जमा करवाकर वाहन छूटने के आदेश प्रारंभ करने होंगे। **पर इस लिंक पर क्लिक करके आप वाहन के प्रति जुर्माने की राशि और वाहन स्क्रैप डीलर को पार्किंग और क्रेन के लिए कितना पैसा देना है जान सकते है।**

वैसे आपकी जानकारी हेतु बता दें रिक्शा, तीन पहिया वाहन और दो पहिया वाहनों के लिए जुर्माना 5000 रुपए और चार पहिया या उससे अधिक पहिया वाहनों के लिए 10000 रुपए जुर्माना जमा करने पर वाहन छुड़वाने का आदेश दिया जा रहा है। क्रेन चार्ज एवम्-2 दिन से अधिक देरी होने पर पार्किंग चार्ज अलग से वाहन स्क्रैप डीलर को देने पर ही वाहन प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन वाहन स्क्रैप डीलर को क्रेन चार्ज और पार्किंग के नाम पर दिया जाने वाला पैसा आप परिवहन विभाग द्वारा जारी एसओपी से जांच कर ही दे कही ऐसा ना हो की आपको स्क्रैप डीलर को यह मूल्य बहुत कम देना हो पर वह आपसे मोटी रकम की मांग कर दे। **यह हम आपको इस लिए सूचित कर रहे है क्योंकि हमारे पास इस तरह की अनगिनत शिकायते आ रही हैं की एसओपी के अनुसार रकम बहुत कम बन रही हैं पर तानाशाही रवैया अपनाते हुए वाहन स्क्रैप डीलर वाहन मालिकों से अनाप शनाप पैसा पार्किंग और क्रेन के नाम से वसूल रहे हैं।** परिवहन विभाग के आला अधिकारियों को इस बात की जानकारी है पर उनके द्वारा वाहन स्क्रैप डीलरो पर कार्यवाही की जाएगी इसकी आशा/ उम्मीद कम है क्योंकि उनके द्वारा जिन वाहन स्क्रैप डीलरो को आपके जब्त किए गए वाहन सुपूर्द किए जा रहे हैं उनमें से 5 वाहन स्क्रैप डीलर तो भारत सरकार द्वारा ब्लैक लिस्टेड है और 2 वाहन स्क्रैप डीलर वह है जो बॉक्सर तक का प्रयोग कर जनता के वाहन अपने कब्जे में ले रहा है। तीन ऐसे वाहन स्क्रैप डीलर हैं जिन्होंने पिछले साल जो वाहन प्राप्त किए थे उनके भी पैसे नहीं दिए थे और इस साल कई नोटिस प्राप्त होने पर 2 वाहन स्क्रैप डीलरो ने पिछले साल के वाहनों के पैसे विभाग में जमा करवा तो दिए पर इस साल उससे अधिक वाहन उठाने के बाद। इसीलिए आप को यह सूचित किया जा रहा है की वाहन स्क्रैप को क्रेन और पार्किंग चार्ज पहले से चेक करने पर ही देना और अगर गलत मांगता है तो तत्काल उसकी शिक़ायत लिखित में दर्ज करवाना।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में स्कूल की चलती बस में नर्सरी की छात्रा का यौन शोषण, ड्राइवर समेत तीन लोग घिनौनी करतूत में शामिल

पूर्वी दिल्ली। आनंद विहार थाना क्षेत्र के एक निजी स्कूल की चलती बस में नर्सरी कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा के साथ यौन शोषण का मामला सामने आया है। आरोप है कि चार वर्षीय बच्ची के साथ बस चालक, परिचालक और सहायक ने वारदात को अंजाम दिया है। अभिभावकों ने थाने में केस दर्ज नहीं करवाया। स्कूल की शिकायत पर आनंद विहार थाना ने यौन शोषण, पॉक्सो समेत कई धाराओं में प्राथमिकी की है। स्कूल ने तीनों आरोपियों को नौकरी से निकाल दिया है। पुलिस तीनों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। साथ ही पीड़ित बच्ची की पुलिस काउंसलिंग करवा रही है।

स्कूल के बाह अभिभावकों का हंगामा: पुलिस सूत्रों ने बताया कि बुधवार सुबह एक निजी स्कूल के बाहर अभिभावकों के हंगामा करने की सूचना मिली थी। पुलिस टीम मौके पर पहुंची, जहां कुछ अभिभावक मिले। उन्होंने पुलिस को बताया कि नर्सरी में पढ़ने वाली एक छात्रा इंदिरापुरम अपने परिवार के साथ रहती है।

उस वक्त बस में अकेली थी छात्रा : स्कूल की बस से आना जाना करती है। बस में छात्रा को अकेला पाकर चालक, परिचालक व सहायक ने उसका यौन शोषण किया। बच्ची डरी हुई हालत में अपने घर पहुंची थी, जब मां ने उससे पूछा तो उसने वारदात के बारे में बताया। जब स्कूल के अन्य अभिभावकों को इस वारदात का पता चला तो उन्होंने इकट्ठा होकर स्कूल पर हंगामा किया।

स्कूल से शिकायत मिलने पर हुई कार्रवाई : सूत्रों ने कहा कि पुलिस स्कूल में गई तो बच्ची के अभिभावकों ने केस दर्ज करवाने से ही मना कर दिया। स्कूल से शिकायत मिलने पर कार्रवाई की गई। आरोपियों से भी पूछताछ की जा रही है।

क्रोनोलॉजी : 31 अगस्त 2024: द्वारका थाना क्षेत्र के एक निजी स्कूल में पांच वर्ष की बच्ची के साथ यौन शोषण।

छह अप्रैल 2024: न्यू अशोक नगर थाना क्षेत्र के एक निजी स्कूल में सहपाठियों ने 12 वर्ष के छात्र के साथ किया कुकर्म।

युवती और उसकी मौसी के साथ सामूहिक दुष्कर्म : दिल्ली के आश्रम इलाके की रहने वाली किशोरी 10 नवंबर की रात को मौसी के साथ क्लब जाने के लिए आश्रम अंडरपास के पास खड़ी थी। इसी बीच एक कार में सवार पांच युवक वहां पहुंचे। उन्होंने किशोरी की मौसी से बात की और कहा कि वे उन्हें मालवीय नगर और गुरुग्राम के क्लब ले जा सकते हैं।

गुरुग्राम से दिल्ली की कनेक्टिविटी कैसे होगी बेहतर ? लाखों वाहन चालकों को राहत के लिए बन रहा प्लान

श्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित कर पांच किलोमीटर के अंतराल पर इंटरचेंज यानी जंक्शन की सुविधा पर जोर देना होगा। सभी जंक्शन क्लोवरलीफ की तरह बनाने होंगे ताकि किसी भी तरफ से आने वाले वाहन पूरी स्पीड के साथ आगे दूसरी तरफ निकल जाएं। इससे कहीं भी ट्रैफिक का दबाव नहीं दिखाई देगा। कई शहरों में भी थ्री लेयर एलिवेटेड रोड बनाने के ऊपर जोर दिया जा रहा है।

गुरुग्राम। आईटी, आईटी इनेबल्ड, टेलीकाम, ऑटोमोबाइल से लेकर मेडिकल टूरिज्म सेक्टर में विश्वस्तरीय पहचान बनाने वाली साइबर सिटी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से बिल्कुल सटी हुई है। इसके बाद भी एक-दूसरे इलाके में जाने-आने से पहले दस बार सोचना पड़ता है। इसके पीछे मुख्य कारण दोनों इलाकों को जोड़ने वाली सभी सड़कों पर ट्रैफिक का भारी दबाव है।

पीक ऑवर ही नहीं बल्कि 24 घंटे सड़कों पर वाहनों का दबाव है। दोनों के बीच इतनी जगह भी नहीं बची कि एक भी नई सड़क बनाई जा सके। ऐसे में जानकारों का मानना है कि श्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित करने पर तत्काल प्रभाव से जोर देना होगा। इसमें जितनी देरी की जाएगी, उतनी ही समस्याएं विकराल होती चली जाएंगी। वैसे तो दिल्ली-गुरुग्राम को कई सड़कें आपस में जोड़ती हैं, लेकिन इनमें सबसे मुख्य है दिल्ली-जयपुर हाईवे।

5 लाख वाहन रोजाना क्रॉस करते हैं सिरहौल बॉर्डर

यह दिल्ली-गुरुग्राम के बीच लाइफ लाइन के रूप में है। हाईवे पर दिल्ली में धौलाकुआं से लेकर हरियाणा-राजस्थान सीमा तक ट्रैफिक का दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसमें से भी धौलाकुआं से लेकर आइएमटी मानेसर तक ट्रैफिक का दबाव सबसे अधिक है। दबाव का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन औसतन साढ़े चार से पांच लाख वाहन सिरहौल बॉर्डर को क्रॉस करते हैं। द्वारका एक्सप्रेस-वे के पूरी तरह चालू होने के बाद केवल 30 प्रतिशत तक ट्रैफिक का दबाव कम होने की उम्मीद है। ऐसे में दिल्ली-जयपुर हाईवे को एलिवेटेड हाईवे के रूप में विकसित करना ही समस्या का स्थायी समाधान है। इसके लिए अलग से जमीन की व्यवस्था भी नहीं करनी होगी।

कई अन्य विकल्प पर भी देना होगा जोर

दिल्ली-एनसीआर में ट्रैफिक का दबाव बढ़ने के पीछे मुख्य कारण है आबादी का दबाव। सार्वजनिक परिवहन सुविधा बेहतर न होने की वजह से दिल्ली-एनसीआर में काम करने वाले लोग नजदीक ही रहना पसंद करते हैं। इसे ध्यान में रखकर दिल्ली-अलवर के बीच रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कॉरिडोर विकसित करने की योजना 10 साल पहले बनाई गई थी ताकि दिल्ली में काम करने वाले लोग मानेसर से लेकर अलवर तक रह सकें।

आज तक इस योजना के ऊपर जमीनी स्तर पर एक इंच भी काम आगे नहीं बढ़ा। यदि समय से योजना पूरी हो जाती तो आज दिल्ली से अलवर के बीच की तस्वीर कुछ और होती। इसके अलावा गुरुग्राम-कापसहेड़ा रोड को भी एलिवेटेड बनाने की आवश्यकता है। सिरहौल बॉर्डर से पहले दिल्ली-जयपुर हाईवे से लेकर गुरुग्राम-फरीदाबाद रोड एवं आगे गुरुग्राम-सोहना हाईवे तक अरावली के ऊपर से होते हुए एलिवेटेड हाईवे विकसित करने की आवश्यकता है।

सोहना तक करना होगा मेट्रो का विस्तार

दिल्ली की तरफ से आने वाले जिन लोगों को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर जाना है वे सिरहौल बॉर्डर से पहले एलिवेटेड हाईवे पर चले जाएंगे। कुछ ही मिनट में वाहन दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर चले जाएंगे। पुराने गुरुग्राम के इलाके में ही नहीं बल्कि मानेसर एवं सोहना तक मेट्रो का विस्तार करना होगा। इससे आंतरिक सड़कों पर भी ट्रैफिक का दबाव कम होगा। धौलाकुआं से मानेसर के बीच रोपवे सिस्टम विकसित करने के ऊपर भी जोर देने से काफी लाभ होगा। केंद्रीय भूतल सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने कई साल पहले इसके ऊपर चर्चा शुरू की थी, लेकिन बात आगे नहीं बढ़ी। इस संबंध में एनएचएआई के पूर्व तकनीकी सलाहकार जेएस सुहाग ने कहा, ₹मैंने लगभग 10 साल पहले ट्रैफिक दबाव को कम करने के लिए क्या किया जाए, इस बारे में शंघाई जाकर अध्ययन किया था। वहां देखा कि इतना बड़ा शहर होने के बाद भी ट्रैफिक दबाव नहीं क्योंकि थ्री लेयर एलिवेटेड रोड की सुविधा पूरे शहर में है। लगभग सभी हाईवे भी थ्री लेयर एलिवेटेड हैं। दिल्ली-गुरुग्राम के बीच थ्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित करने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं बचा है। जगह है नहीं कि नई सड़क बनाई जाए। यही नहीं साइबर सिटी की सभी मुख्य सड़कों को शंघाई की तरह एलिवेटेड करना होगा।"

क्या बोले विधायक ?

गुड़गांव विधायक मुकेश शर्मा ने कहा, ₹दिल्ली-गुरुग्राम के बीच हाईवे को एलिवेटेड कराने की मांग मैं केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के सामने रख चुका हूं। इस दिशा में काम तेज कराने के लिए मैं जल्द ही उनसे मुलाकात करूंगा। केंद्रीय मंत्री खुद महसूस करते हैं कि दिल्ली-गुरुग्राम के बीच ट्रैफिक का काफी दबाव है। ऐसे में उम्मीद है कि जल्द ही हाईवे को एलिवेटेड कराने की योजना सिरे चढ़ेगी। साइबर सिटी की सभी मुख्य सड़कों को भी एलिवेटेड कराना उनकी प्राथमिकता में है। वह जल्द ही प्रदेश सरकार के सामने इस विषय को प्रमुखता से रखेंगे।"

एलजी ने दी बड़ी खुशखबरी, 2 हजार से ज्यादा लोगों को जल्द मिलेगी नियुक्ति

दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने उन लोगों के लिए खुशखबरी सुनाई है जिन्हें अभी तक होम गार्ड के पद पर नियुक्ति नहीं मिली है। एलजी ने 2346 लोगों को तुरंत नियुक्ति देने के निर्देश दिए हैं। बताया गया कि एलजी ने जनवरी में 10285 होम गार्ड वालंटियर्स के नामांकन को मंजूरी दी थी।

नई दिल्ली। दिल्ली में होम गार्ड के लिए जिन लोगों का होम गार्ड की भर्ती में नंबर आया हुआ है। उन्हें एलजी वीके सक्सेना ने बड़ी खुशखबरी दी है। अब दो हजार से ज्यादा लोगों को जल्द ही नौकरी मिल जाएगी।

तुरंत नियुक्ति के दिए हैं निर्देश

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने ऐसे 2,346 होम गार्ड की तुरंत नियुक्ति के निर्देश दिए हैं, जिन्होंने शारीरिक माप और दक्षता परीक्षण के साथ लिखित परीक्षा पास कर ली है। जबकि इन पदों के लिए 7,939 अन्य रिक्तियां अदालत में लंबित दो मामलों के अंतिम फैसला आने के इंतजार में लंबित हैं।

बेवजह करना पड़ेगा इंतजार

एलजी के इस फैसले से उत्तीर्ण हो चुके 2,346 अभ्यर्थियों को बेवजह इंतजार नहीं करना पड़ेगा। उपराज्यपाल ने सभी उत्तीर्ण उम्मीदवारों के लिए एक सप्ताह के अंदर एक विशेष मेडिकल कैंप आयोजित कर सभी योग्य उम्मीदवारों को जल्द से जल्द नियुक्ति पत्र सौंपने का निर्देश दिया।

10,285 होम गार्ड वालंटियर्स के नामांकन को दी थी मंजूरी

एलजी ने जनवरी में 10,285 होम गार्ड वालंटियर्स के नामांकन को मंजूरी दी थी। इसके बाद 23 जनवरी को इन 10,285 रिक्तियों को भरने के लिए एक विज्ञापन जारी किया गया था, जिसमें 1,09,001 आवेदकों ने आवेदन किया था, लेकिन केवल 32,511 ने परीक्षा के लिए रिपोर्ट किया था। आगे जानिए आखिर सत्यापन के लिए क्या-क्या दस्तावेज चाहिए होते हैं।

दस्तावेज सत्यापन के लिए आवश्यक दस्तावेज

10वीं कक्षा का प्रमाणपत्र और अंक पत्र

12वीं कक्षा का प्रमाणपत्र और अंक पत्र

अन्य शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र एवं मार्कशीट

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति का प्रमाण पत्र

अंत में दिए गए नोट के अनुसार भूतपूर्व सैनिक या भूतपूर्व सीएपीएफ कार्मिक के रूप में प्रमाण।

"दिल्ली के निवास" का प्रमाण:-

उम्मीदवार को निम्नलिखित में से कोई एक लाना होगा। वैध पासपोर्ट/ चुनाव आयोग फोटो आई कार्ड/ वर्तमान और वैध राशन कार्ड जिस पर उसका नाम और फोटो हो। यदि राशन कार्ड बना है/ उम्मीदवार की फोटो के साथ एक अन्य पहचान पत्र का फोटोयुक्त/ परिवहन विभाग जीएनसीटी दिल्ली द्वारा जारी वैध ड्राइविंग लाइसेंस/ आवासीय फोटोयुक्त सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक खाते की विधिवत सत्यापित पासबुक/ दिल्ली का पता/ राजस्व द्वारा जारी सक्षम/अधिकृत सरकारी प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र/ जीएनसीटीडी।

बोनस अंक (एनसीसी प्रमाण पत्र, होम गार्ड / नागरिक सुरक्षा) के लिए सहायक दस्तावेजों का प्रमाण

स्वयंसेवक अनुभव प्रमाण प्रमाण पत्र, नागरिक सुरक्षा अग्रिम पाठ्यक्रम प्रमाण पत्र।

दो फोटोग्राफ (ऑनलाइन आवेदन में अपलोड किए गए समान)

'बस मार्शलों का मुद्दा एलजी के अधिकार क्षेत्र में', दिल्ली सरकार ने उपराज्यपाल से की सिफारिश

दिल्ली सरकार ने कहा कि कैबिनेट सीडीवी (CDV) को बस मार्शलों (Bus Marshal) के रूप में तत्काल बहाली की एलजी से सिफारिश कर चुकी है। दिल्ली कैबिनेट ने अपनी सिफारिश में कहा है कि वरिष्ठ अधिकारियों ने दिल्ली सरकार को लिखित में दिया है कि बस मार्शलों के लिए नीति बनाने का अधिकार केवल एलजी के पास है।

नई दिल्ली। एलजी वीके सक्सेना द्वारा सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स को प्रदूषण रोकने से संबंधित कार्य के लिए चार माह तक लगाने की अनुमति देने के बाद दिल्ली सरकार ने दावा किया कि उसकी सिफारिश पर एलजी ने सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स को रखे जाने की अनुमति दी है। दिल्ली सरकार ने मांग की है कि इन सीडीवी को बस मार्शल के लिए नियमित तौर पर नियुक्ति दी जाए। मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा है कि उनके नेतृत्व में उनकी सरकार का मंत्रिमंडल कुछ दिन पहले ही इस बारे में एलजी से सिफारिश कर चुका है।

सरकार के अनुसा,र इस मामले में मंत्रिमंडल की बैठक में रखी गई रिपोर्ट के आधार पर कैबिनेट से प्रस्ताव किया है। इसमें सीडीवी को बस मार्शलों के तौर पर बहाली की बात कही गई थी। उस रिपोर्ट के आधार पर अपने सुझाव देते हुए उन्होंने एलजी के समक्ष आधिकारिक नोट रखा था।

बस मार्शलों का मुद्दा एलजी के अधिकार क्षेत्र में

दिल्ली सरकार ने कहा है कि दरअसल परिवहन आयुक्त द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया है कि बस मार्शलों का मुद्दा एलजी के अधिकार क्षेत्र में आता है। सीएम आतिशी ने अपने नोट में कहा है योजना तैयार होने तक बस मार्शलों को उसी तरह से बहाल किया जाए जैसे 31 अक्टूबर 2023 से पहले था।

बस मार्शल के रूप में उपयोग की मिले छूट

सीएम ने कहा है कि एलजी को सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स को बस मार्शल के रूप में उपयोग करने के लिए एक बार की छूट देनी चाहिए। सीएम ने 10 नवंबर 2024 को आयोजित सभी मंत्रियों की बैठक में बस मार्शलों और बसों में महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे पर व्यापक रूप से विचार-विमर्श किया गया।

एलजी के समक्ष रखी रिपोर्ट

सीएम आतिशी ने विचार-विमर्श की रिपोर्ट एलजी के समक्ष रखी हैं। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि दिल्ली सरकार बस मार्शलों पर आने वाले सभी तरह के वित्तीय खर्च को उठाने के लिए तैयार है। बता दें कि 2012 की निर्भया घटना ने महिला सुरक्षा की कमी को उजागर किया था।

यमुना को लेकर एलजी ने दिल्ली सरकार को घेरा

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने यमुना में प्रदूषण के लिए दिल्ली सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा, एनजीटी के निर्देश पर जनवरी, 2023 में उनकी देखरेख में यमुना की सफाई शुरू हुई थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को लगा कि उन्हें इसका श्रेय नहीं मिलेगा, इसलिए छह माह बाद सुप्रीम कोर्ट जाकर इस काम पर रोक लगवा दिया। यदि यह काम जारी रहता तो आज यमुना की स्थिति कुछ और होती। वह

कार्तिक मास व्रत कथा के 12वें अध्याय का पाठ करने से जीवन के दुखों का होता है अंत

भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ है। भगवान विष्णु का मां लक्ष्मी के साथ गरुड़ पर बैठकर असुर जालंधर के अंत को लेकर संवाद हो रहा है। ऐसे में आज हम आपको कार्तिक व्रत कथा के 12वें अध्याय के बारे में बताने जा रहे हैं।

कार्तिक माह के 12वें अध्याय में देवर्षि नारद जी द्वारा बताया गया है कि जगत के पालनहार भगवान श्रीहरि विष्णु की स्तुति किस तरह करनी चाहिए। बता दें कि भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ है। भगवान विष्णु का मां लक्ष्मी के साथ गरुड़ पर बैठकर असुर जालंधर के अंत को लेकर संवाद हो रहा है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कार्तिक व्रत कथा के 12वें अध्याय के बारे में बताने जा रहे हैं।

कथा

बता दें कि देवर्षि नारद बोले के असुर जालंधर राक्षस को आता देखकर सभी इंद्रादि देवगण भय से कांप उठे और श्रीहरि विष्णु की स्तुति करने लगे। तब देववृंद बोले, हे भगवन्-आपने मत्स्य-कूर्मादि कितने की अवतार लेकर अपने भक्तों का हित और कार्य करने के लिए उद्यत रहते आए हैं। हमेशा दुखियों के दुख का नाश करते आए हैं और ब्रह्मा, विष्णु व महेश रूप धारण कर संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार करते आए हैं। आप अपने हाथों में शंख, गदा, पद्म और तलवार धारण किए हैं। ऐसे भगवान को नमस्कार है।

आप श्रीलक्ष्मी के पति, गरुड़ पर सवारी करने वाले, दैत्यों का विनाश करने वाले, पीताम्बरधारी और यज्ञादि आदि समस्त क्रियाओं को परिपूर्ण करने और विघ्नों को दूर करने वाले भगवान विष्णु को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं। हे भगवान विष्णु आप राक्षसों से पीड़ित देवताओं के दुखरूपी पर्वत के लिए वज्र के समान हैं। आप शेषरूपी शैय्या पर शयन करने वाले हैं और सूर्य चंद्रमा आपके दोनों नेत्र हैं। इस स्वरूपधारी भगवान को हमारा बारम्बार प्रणाम हैं।

देवर्षि नारद ने कहा कि जो भी व्यक्ति को इस संकट को नाश करने वाले स्त्रोत का पाठ करेगा, उसको भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा से कभी दुख नहीं होगा। इस तरह से देवतागण भगवान श्रीहरि विष्णु की स्तुति करने लगे। तब भगवान श्रीहरि को देवताओं की विपत्ति का ज्ञान हुआ और वह फौरन शैय्या से उठ खड़े हुए और उदास होते हुए गरुड़ पर सवार होकर श्रीलक्ष्मी से कहने लगे, तुम्हारे भाई जालंधर ने देवताओं को बहुत कष्ट दिए हैं। देवताओं ने मुझको युद्ध के लिए बुलाया है, इसलिए मैं वहां शीघ्रतापूर्वक जाऊंगा।

तब मां श्रीलक्ष्मी ने कहा, हे नाथ, हे कृपानिधि मैं आपकी पत्नी हूं और मैं हमेशा आपमें भक्ति रहती हूं। तब फिर आप मेरे भाई को युद्ध में कैसे मार सकेंगे। भगवान श्रीहरि ने कहा कि शिवजी के अंश से उत्पन्न होने वाला जालंधर ब्रह्म देव के वरदान के कारण और तुम्हारी प्रीतिवश जालंधर मेरे वध योग्य नहीं है।

इसके बाद श्रीहरि विष्णु गरुड़ पर आसीन होकर शङ्ख, चक्र, गदा और तलवार धारण किए हुए दैत्यों से युद्ध करने के लिए वहां पहुंचते हैं। जहां पर देवतागण उनकी स्तुति कर रहे थे। फिर वायु के वेग से पीड़ित होकर और गरुड़ के पंखों द्वारा प्रताड़ित दैत्यगण आकाश में उड़ने लगे, जिस तरह से वायु से आहत होकर मेघ आकाश में उड़ते हैं। वहीं राक्षसों को पीड़ित देखकर दैत्याधीश जालंधर क्रोधित होता हुआ उछलकर श्रीविष्णु के समीप गया।

कार्तिक पूर्णिमा कब है? जानें शुभ मुहूर्त और इसका महत्व

सनातन धर्म में कार्तिक पूर्णिमा का बेहद महत्व माना जाता है। इस दिन देव दीपावली भी मनाई जाती है। इस साल की कार्तिक पूर्णिमा का समय 15 नवंबर 2024 को सुबह 6 .31 बजे से शुरु होगी और 16 नवंबर को सुबह 3 .02 बजे तक मनाई जाएगी।

कार्तिक माह के बेहद शुभ माना जाता है इस मास में कई बड़े-बड़े त्योहार आते हैं। इस महीने के दौरान, कार्तिक पूर्णिमा और देव दीपावली जैसे दिन मनाए जाते हैं और इन्हें महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कार्तिक माह की देवउठनी एकादशी के मौके पर भगवान विष्णु चार महीने की निद्रा योग से जागते हैं और सृष्टि का पलान करते हैं। इस महीने में सबसे महत्पूर्ण दिन कार्तिक पूर्णिमा का दिन है, जो लोग इस दिन गंगा और यमुना नदियों में स्नान करते हैं। उनको ऐसा करने से 100 अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य मिलेगा। इस दिन को त्रिपुरारी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है, माना जाता है इस दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का वध किया था। इतना ही नहीं, विष्णु पुराण के अनुसार, कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य रुप में अवतार लिया था। इस दिन भगवान शिव के साथ-साथ श्री विष्णु की पूजा की जाती है। आइए जानते हैं कार्तिक पूर्णिमा कब है?

कार्तिक पूर्णिमा कब है?

ज्योतिष के अनुसार, इस साल कार्तिक पूर्णिमा 15 नवंबर को मनाई जाएगी। यह अवधि 15 नवंबर को सुबह 6:31 बजे से शुरू होगी और 16 नवंबर को सुबह 3:02 बजे तक रहेगी।

दान और स्नान का शुभ मुहूर्त

शुभ मुहूर्त ज्योतिषी ने बताया कि पूजा या दान करने का समय सुबह 8:46 बजे से 10:26 बजे तक है, जबकि स्नान का मुहूर्त सुबह 6:28 बजे से 7:19 बजे तक है।

कार्तिक पूर्णिमा पर बन रहे ये शुभ योग

ज्योतिष के अनुसार, इस साल कार्तिक पूर्णिमा के दिन गजकेसरी राजयोग बन रहा है। इसके बाद शश राजयोग बनेगा। इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की विधिवत रुप से पूजा करनी चाहिए और भोग लगाना चाहिए। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन देवी-देवता पृथ्वी पर आते हैं और उनके स्वागत के लिए भक्त अपने घरों के आसपास दीये जलाते हैं।

चेहरे पर झुर्रियों के निशान को कम कर देगा ये एंटी एजिंग पैक, दिखेंगी जवां

अगर आप भी रिंकल क्रीम का इस्तेमाल करती हैं, तो इसका इस्तेमाल आज से ही बंद कर दीजिए। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे घरेलू फेसपैक के बारे में बताने जा रहे हैं, जो एंटी-एजिंग की तरह काम करता है।

ढलती उम्र के साथ ही हर किसी के चेहरे पर झुर्रियां आना शुरू हो जाती हैं। लेकिन कुछ लोगों के फेस पर समय से पहले फाइन लाइंस आने लगती हैं। ऐसे में इन फाइन लाइंस को छिपाने या खत्म करने के लिए लोग रिंकल क्रीम का भी इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में अगर आप भी रिंकल क्रीम का इस्तेमाल करती हैं, तो इसका इस्तेमाल आज से ही बंद कर दीजिए। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे घरेलू फेसपैक के बारे में बताने जा रहे हैं, जो एंटी-एजिंग की तरह काम करता है और आपके फेस से फाइन लाइन को भी खत्म कर देगा। साथ ही यह आपके चेहरे पर कमाल का निखार लाएगा। तो आइए जानते हैं इस नेचुरल फेसपैक के बारे में...

असरदार है ये नुस्खा

आज हम आपके लिए एक बेहद आसान और असरदार नुस्खा लेकर आए हैं। इसमें मुल्तानी मिट्टी के साथ-साथ सभी घरेलू और प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल किया जाता है। यह फेसपैक न सिर्फ चेहरे से झुर्रियों के निशान को गायब कर देगा बल्कि यह आपकी त्वचा को ग्लो भी देगा। साथ ही इस फेस पैक का इस्तेमाल करने से दाग-धब्बे, एक्ने और ब्लैकहेड्स भी साफ हो जाएंगे।

फेस पैक सामग्री

मुल्तानी मिट्टी- 2 चम्मच
चावल का आटा
शहद- 1 चम्मच
कच्चा दूध- जरूरत अनुसार
एलोवेरा जेल- जरूरत अनुसार

ऐसे करें अप्लाई

एक कटोरी में मुल्तानी मिट्टी, चावल का आटा शहद, नींबू का रस और एलोवेरा डालकर मिक्स कर लें।

फिर इसमें जरूरत अनुसार कच्चा दूध डालकर फेसपैक तैयार कर लें।

अब इसको अपने फेस पर अप्लाई करें और 30 मिनट बाद फेसवॉश कर लें।

सप्ताह में दो बार इस फेसपैक को अप्लाई करें।

इससे आपके चेहरे की सारी झुर्रियां साफ हो जाएंगी।

त्वचा पर दूध के फायदे

त्वचा से जुड़ी कई समस्याओं के लिए दूध बेहद फायदेमंद होता है। क्योंकि दूध एक नेचुरल प्रोडक्ट है, जिसमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इसीलिए डर्मेटोलॉजिकल डिसीज के ट्रीटमेंट के लिए भी दूध का इस्तेमाल किया जाता है।

दूध एक्ने को कम करने, सीबम के सीक्रेशन को रेगुलेट करने, ब्लैकहेड्स को साफ करने और एजिंग साइन को कम करने में फायदेमंद माना जाता है।

त्वचा पर मुल्तानी मिट्टी के फायदे

बता दें कि हमारी त्वचा पर मुल्तानी मिट्टी नेचुरल क्लींजर की तरह काम करती है। साथ ही यह पोर्स में जमी गंदगी को साफ करने के साथ ही पिंपल्स होने से रोकती है। मुल्तानी मिट्टी में कई पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो हमारे फेस से झुर्रियों को कम करने, डार्क स्पॉट को हल्का करने और चेहरे को निखान देने में मदद करती है।

{बाल दिवस विशेष} : बाल प्रज्ञान: बालमन का सुन्दर विश्लेषण

सन 1989 में हरियाणा में जन्मे डॉ. सत्यवान सौरभ बालसाहित्य के एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। साहित्यकार, पत्रकार और अनुवादक डॉ. सत्यवान सौरभ ने बच्चों के साथ ही बड़ों के लिए भी विपुल साहित्य सर्जन किया है। बाल कविता की पुस्तकों के साथ ही प्रौढ़ साहित्य में दोहा, कथा, कविता, अनुवाद, रूपान्तर, सम्पादन की कई कृतियों का सर्जन कर उन्होंने हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बीस वर्षों से स्वतंत्र रूप से लेखन कर साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं।

बाल प्रज्ञान, बाल साहित्यकार डॉ. सत्यवान सौरभ जी की बाल कविताओं का सुन्दर संग्रह है। कवि की सभी रचनाएँ बाल मनोविज्ञान के अनुरूप हैं और बच्चों के मन का सुन्दर विश्लेषण करती हैं। बच्चों को बरसात के पानी में भीगना बहुत भाता है। बरसात की रिमझिम फुहारों में वे गर्मी की सारी तपन को भूलकर झूम उठते हैं। 'रिमझिम-रिमझिम बारिश आई' कविता में कवि बरसात के साथ बच्चों के इसी सम्बन्ध को अभिव्यक्त करते हुए कहता है-

"चली हवाएँ करती सन-सन।
झूम उठे हैं सबके तन-मन॥
बादल प्यारे गीत सुनाते।
बच्चे मिलकर धूम मचाते॥
जीव जन्तु और खेत हर्षाए।
पंछियों ने पँख फैलाए॥"

इस बालकविता संग्रह की पहली कविता 'बने संतान आदर्श हमारी' में कवि ने किसी भी माता-पिता की होने वाली संतान का सुन्दर चित्रण किया है। बालमन के स्तर पर उतरकर कवि ने भावना को सहज रूप से मुखरित करते हुए कहा है-

" बने संतान आदर्श हमारी, वह बातें सिखला दूँ मैं।
सोच रहा हूँ जो बच्चा आये, उसका रूप, गुण सुना दूँ मैं॥
बाल घुंघराले, बदन गठीला, चाल, ढाल में तेज भरा हो।
मन शीतल हो ज्यों चंद्र-सा, ओज सूर्य-सा रूप धरा हो॥
मन भाये नक्स, नैन हो, बातें दिल की बता दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी, वह बातें सिखला दूँ मैं॥"

'नानी' इस संग्रह की लम्बी कविता है जिसमें बाल सुलभ शरारतों का यथार्थ और आकर्षक वर्णन किया गया है। बच्चे घर में उछलकूद कर सारा घर अस्त-व्यस्त कर देते हैं। जब उन्हें कोई रोकता है तो मन में खीज पैदा होती है। कवि ने बच्चों की इसी चंचलता का पक्ष रखते हुए कहा है-

"मन चाहे मैं बाहर घूमूँ।
मस्ती सब के साथ करूँ।
खेलूँ दौड़ू सबके संग मैं,
कुश्ती में दो हाथ करूँ॥
जी भर के मैं तैरूँ जाकर,
पकड़े तो मैं हाथ न आऊँ।
बचपन चाहता केवल मस्ती,
सबको मैं ये बात बताऊँ॥

नानी-नानी कहो मम्मी से,
इस बन्धन को दूर भगाएँ।
हम सब बच्चे घर से निकलें,
खेलें-कूदें मौज मनाएँ॥"

'बाल प्रज्ञान' बाल कविता संग्रह की उक्त कविताओं के उदाहरणों से स्पष्ट है कि कवि श्री डॉ. सत्यवान सौरभ बालमन के कुशल पारखी हैं। वे बच्चों को भाने वाले विषयों के साथ ही उनके लिए उपयोगी विषयों को भी अच्छी तरह से जानते हैं। उनका बालमन, बच्चों के साथ बहुत रमता है। संग्रह की शेष रचनाएँ भी बालमन को आकर्षित करने वाली हैं। ये कविताएँ जीवन के विविध पक्षों पर सकारात्मक दृष्टि से विचार करती हुई, बच्चों को संस्कारित करने का काम करती हैं। 'मन को भाता है कम्प्यूटर' कविता में कंप्यूटर के माध्यम से कंप्यूटर का महत्त्व बताते हुए उसे अनमोल कहा गया है। 'तितली रानी' कविता, आधुनिक समय में पक्षियों के महत्त्व पर प्रकाश डालती है। 'हरियाली तुम आने दो।' रचना, बचपन में बच्चों द्वारा पेड़-पौधें पसंद करने के आनन्द पर आधारित है। 'दादा-दादी' एक बाल सजल है जिसमें बच्चों की दादी के घर जाने की उत्सुकता अभिव्यक्त की गई है। दादी के घर में बच्चों को दादा-दादी, बुआ और चाचा का प्यार मिलता है।

'करो स्कूल की सब तैयारी' कविता बच्चों के विद्यालय जाने के उत्साह को शब्दायित करती है। 'कितने सारे आम' कविता में पेड़ पर लटके कच्चे-पक्के आम बच्चों को लुभाते हैं। 'सेहत का खजाना' कविता में सब्जियों के गुणों का बखान किया गया है। 'पुलिस हमारे देश की' कविता, बच्चों में देश सेवा की भावना को लाती है। 'सदा तिरंगा यूं लहराये' कविता, बच्चों को अच्छी बातें अपनाकर जीवन को सफल बनाने का संदेश देती है। 'चिट्ठी' कविता में आज के समय में चिट्ठियों के नहीं लिखने पर चिन्ता व्यक्त की गई है। चिट्ठियाँ नहीं आने से डाकिया भी बहुत दिनों के बाद कभी-कभार ही दिखाई देता है।

'गिलहरी' कविता में छुट्टी के दिन बच्चों द्वारा पार्क में पिकनिक मनायेजते वक़्त गिलहरी का सजीव वर्णन है। 'प्यारी चिड़िया रानी' कविता में मानव द्वारा जंगलों को उजाड़ने के कारण वन्य जीवों पर आए संकट का मार्मिक चित्रण है। 'दूधवाला' कविता में कवि मार्मिकचित्र बनाता है, 'फूलों की सीख' कविता में रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई है। 'चंदा मामा' कविता बचपन में हिलमिल कर रहे तारों के बीच चाँद सेबच्चों को मिलने वाली सीख को दर्शाती है। 'ऋतु बसन्त है आई' कविता में बसन्त ऋतु में प्रकृति में आए निखार को दर्शाया गया है। 'आ री आ, ओरी गौरैया' कविता में छोटी—सी चिड़िया गौरैया के प्रति बच्चों के प्रेम को चित्रित किया गया है। 'पूसी-मौसी, मरियल-मंकी' कविता में पूसी बिल्ली, मरियल मंकी और लालू कुत्ते की दोस्ती के माध्यम से सबको आपस में मिलजुल कर रहने का संदेश दिया गया है। 'रंग-बिरंगी' कविता में एक बच्चा दादू से पिचकारी खरीदने को कहता है ताकि वह अपने मित्रो के साथ मस्ती से होली खेल सके। यह कविता, त्यौहारों के प्रति बच्चों के उत्साह को प्रकट करती है।

बाल कविता संग्रह 'बाल प्रज्ञान' की सभी कविताएँ कवि के मौलिक और यथार्थपरक चिन्तन पर आधारित हैं जो बच्चों को अपने आस-पास के परिवेश की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती हैं। ये कविताएँ जहाँ आज के बच्चों की शहरी जीवन शैली का परिचय कराती हैं, वहीं कवि के प्रकृति के प्रेम का भी परिचय देती हैं। ये कविताएँ आधुनिक भावबोध की कविताएँ हैं जो बदली परिस्थितियों का सामना करने के लिए बच्चों को मानसिक रूप से तैयार करती हैं। इन कविताओं की भाषा पढ़े-लिखे परिवारों की बोलचाल की भाषा है जिसमें हिन्दी और अंग्रेज़ी के शब्दों का मिलाजुला प्रयोग होता है। ये कविताएँ बच्चों से सम्बन्धित विषयों को संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच के साथ उजागर करती हैं। कवि ने समसामयिक विषयों को बालमन की कोमलता के साथ स्पर्श किया है। बच्चों से संवाद करती ये कविताएँ बालमन को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही उन्हें स्वस्थ चिन्तन के लिए प्रेरित करती हैं। बालोपयोगी सुन्दर कृति 'बाल प्रज्ञान' के सर्जन के लिए कविवर श्री डॉ। सत्यवान सौरभ जी को हार्दिक बधाई।

-सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
कोटा

{बाल दिवस विशेष}
डॉ. सत्यवान 'सौरभ' की बाल कवितायें

1. बने संतान आदर्श हमारी

बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।
सोच रहा हूँ जो बच्चा आये, उसका रूप,
गुण सुना दूँ मैं।।
बाल घुंघराले, बदन गठीला,
चाल, ढाल में तेज भरा हो।
मन शीतल हो ज्यों चंद्र-सा,
ओज सूर्य-सा रूप धरा हो।।
मन भाये नक्स, नैन हो,
बातें दिल की बता दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।

राह चले वो वीर शिवा की,
राणा की, अभिमन्यु की।
शत्रुदल को कैसे जीते,
सीख चुने वो रणवीरों की।।
बन जाये वो सच्चा नायक,
ऐसे मंत्र पढ़ा दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।
सीख सिखले माँ पन्ना की,
झाँसी वाली रानी की।
दुर्गावती-सा शौर्य हो,
लाज पद्मावत मेवाड़ी-सी।।
भक्ति में हो अहिल्या मीरा,
ऐसी घुटकी पिलवा दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।

पुत्र हो तो प्रह्लाद-सा,
राह धर्म की चलता जाये।
ध्रुव तारा-सा अटल बने वो,
जो सत्य पथ दिखलाये।।
पुत्री जनकर मैत्री, गार्गी,
ज्ञान की ज्योत जलवा दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।
सोच रहा हूँ जो बच्चा आये,
उसका रूप, गुण सुना दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।

2. पंछी

छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखाते।
उड़ते ऊँचे आसमान में,
मंजिल की ये राह दिखाते।

ये छोटे-छोटे जीव मगर,
इनसे ये नभ भी हारा है।
आत्मबल से ओत-प्रोत ये,
मिल उड़ना इनको प्यारा है।

बड़े-बड़े जो ना कर पाए,
पल भर में ये कर जाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखाते।

लड़ते हैं ये तूफानों से,
उड़ सूरज से भी बात करें।
पंख रुकते हैं कब इनके,
सागर, पर्वत भी पार करें।

कोमल काया के हैं लेकिन,
सदा हौंसले ये आजमाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखाते।

तिनके-पत्ती जोड़-जोड़ सब,
रहे घरोंदे हैं सभी सजे।
इच्छा जो दाने-पानी की,
कमा श्रम से, ले हैं मजा।

प्यारी-सी एक सीख देकर,
अंतर्मन को है हर्षाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखाते।

अपने घर, गलियां नगर में,
यदि मधुर स्वर गुंजाना है।
मनुज सहेजे पंछी-पंछी,
गीत यही अब मिल गाना है।

ये नन्हे हैं मित्र हमारे,
हमसे बस ये आस लगाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखाते।

3. ठंड हुई पुरजोर

लगे ठिठुरने गात सब,
निकले कम्बल शाल।
सिकुड़ रहे हैं ठंड से,
हाल हुआ बेहाल।।

बाहर मत निकलो कहे,
बहुत ठंड है आज।
कान पकते सुनते हुए,
दादी की आवाज।।

जाड़ा आकर यूं खड़ा,
ठोके सौरभ ताल।
आग पकड़ने से डरे,
गीले पड़े पुआल।।

सौरभ सर्दी में हुआ,
जैसे बर्फ जमाव।
गली मुहल्ले तापते,
बैठे लोग अलाव।।

धूप लगे जब गुनगुनी,
मिले तनिक आराम।
सर्दी में करते नहीं,
हाथ पैर भी काम।।

निकलो घर से तुम यदि,
रखना बच्चों का ध्यान।
सुबह सांझ घर पर रहो,
ढककर रखना कान।।

लापरवाही मत करो,
ठंड हुई पुरजोर।
ओढ़ रजाई लेट लो,
उठिए जब हो भोर।।

4. प्यारी चिड़िया रानी।

सुबह-सुबह नन्ही चिड़िया,
आँगन में जब आती है।
फुदक-फुदक कर चूं-चू करती,
मीठे गीत रोज सुनाती है।
चिड़िया फुर्र फुर्र उड़ती है,
चोंच से दाने चुगती है।
बच्चों को है देती खाना,
सबसे पहले उठ जाती है।
छज्जा, खिड़की ढूंढें आला,
कहाँ घोंसला जाए डाला।
तिनका थामे चिमटी चोंच में,
सपनों का नीड सजाती है।
उम्मीदों के पंख पसारकर,
नील गगन को उड़ पार कर।
जीवन की कठिनाई झेलती,
अपना हर धर्म निभाती है।
उठो सवेरे और करो श्रम,
प्रगति इसी से आती है।
बच्चों, प्यारी चिड़िया रानी,
हमको यह सिखलाती है।

5. लाये सिंघाड़े

ठेले भर लाये सिंघाड़े के।
दिन आए फिर जाड़े के॥
पानी में ये मोती उगता।
सुंदर रूप तिकोना दिखता॥
जाड़े में हर बार ये आता।
सबके मन को ख़ूब भाता॥
बच्चों इसके गुण भरपूर।
कब्ज बदहजमी करता दूर॥
इसमें फ़ाईबर, प्रोटीन रहता।
ब्लड प्रेशर सब ये सहता॥
व्रत त्यौहार इससे मनती।
हलवा रोटी इससे बनती॥
जब भी तुम जाओ बाजार।
सिंघाड़े लाओ हर बार॥
लाकर ख़ूब सिंघाड़े खाओ।
सेहत अपनी अच्छी बनाओ॥

-डॉ.सत्यवान सौरभ

ईडब्ल्यूएस नियमों में होगा बड़ा बदलाव, दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों में दाखिले के लिए वार्षिक आय सीमा बढ़ेगी; एलजी ने दिए निर्देश

परिवहन विशेष

दिल्ली के LG वीके सक्सेना ने निजी स्कूलों में EWS श्रेणी के तहत प्रवेश के लिए वार्षिक आय सीमा को बढ़ाकर कम से कम 5 लाख रुपये करने का सुझाव दिया है। वर्तमान में यह सीमा 1 लाख रुपये है। LG का कहना है कि मौजूदा आय सीमा हजारों जरूरतमंद बच्चों को योजना का लाभ पाने से वंचित कर रही है।

नईदिल्ली, एलजी वीके सक्सेना (Delhi lG VK Saxena) ने आप (AAP) सरकार को सुझाव दिया है कि निजी स्कूलों में ईडब्ल्यूएस श्रेणी के तहत प्रवेश के लिए वार्षिक आय सीमा (Annual Income Limit) को कम से कम पांच लाख रुपये प्रतिवर्ष किया जाए। फिलहाल यह आय सीमा एक लाख रुपये प्रतिवर्ष है।

एक कोर्ट केस, जिसमें लाभ प्राप्त करने के लिए आय सीमा का मुद्दा हाईकोर्ट के समक्ष विचाराधीन है, सक्सेना ने फाइल पर अपनी टिप्पणी में कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित आय सीमा अवास्तविक और प्रतिबंधात्मक है। उन्होंने बताया कि वर्तमान आय सीमा, जहां न्यूनतम वेतन पाने वाला भी सालाना ढाई लाख रुपये से अधिक कमा रहा है, हजारों जरूरतमंद बच्चों को ईडब्ल्यूएस योजना (EWS Scheme) के तहत लाभ पाने से वंचित कर सकती है।

कोर्ट भी दे चुका है ये आदेश

एलजी ने यह भी उल्लेख किया कि केंद्र सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के लिए निर्धारित आय सीमा आठ लाख रुपये है और अदालत ने भी पिछली सुनवाई में दिल्ली सरकार से इस सीमा को कम से कम ढाई लाख रुपये तक बढ़ाने का निर्देश दिया था।

प्राइवेट स्कूलों में आय सीमा हो पांच लाख

सक्सेना ने सुझाव दिया कि आदर्श रूप से आय सीमा आठ लाख रुपये प्रतिवर्ष होनी चाहिए, क्योंकि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर लाभ पाने वाले छात्र ही उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ते हैं। इसलिए निजी स्कूलों में प्रवेश के लिए आय सीमा को कम से कम पांच लाख रुपये निर्धारित किया जाना चाहिए।

उन्होंने निर्देश दिया कि अदालत में फाइल पर उनके द्वारा लिखी गई राय दर्ज की जाए। बुधवार को भी मामले की सुनवाई हुई और इसे अगली तारीख चार दिसंबर 2024 तक के लिए स्थगित कर दिया गया।

प्रदूषण की रोकथाम के लिए एलजी ने सीडीवी की तैनाती को दी मंजूरी

एलजी वीके सक्सेना ने राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण की रोकथाम के लिए सिविल डिफेंस वालेंटियर्स (सीडीवी) की तैनाती को मंजूरी दे दी है। यह तैनाती चार माह यानी एक नवंबर 2024 से 28 फरवरी 2025 तक के लिए होगी। राजनिवास अधिकारियों के अनुसार, तत्कालीन सीएम अरविंद केजरीवाल के आदेश के बाद एक नवंबर 2023 को इनकी सेवाएं समाप्त कर दी गई थीं।

राजनिवास अधिकारियों ने बताया कि शुरुआत में इस आशय के निर्देश पारित करने के बाद सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी देने में लगभग 12 दिन की देरी हुई। सक्सेना ने, एक बार फिर से दिल्ली सरकार से बस मार्शलों के लिए एक अलग योजना तैयार करने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह किया है

सुनीता केजरीवाल की चुनौती याचिका पर दिल्ली HC ने भाजपा नेता से मांगा जवाब, जानें पूरा मामला

परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट भाजपा नेता हरीश खुराना को आप नेता अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल (Sunita Kejriwal) की एक याचिका पर भाजपा नेता हरीश खुराना से जवाब मांगा है।

सुनीता ने याचिका में दो विधानसभा क्षेत्रों की मतदाता सूचियों में नाम दर्ज कराकर कानून का उल्लंघन करने के लिए उन्हें जारी समन को चुनौती दी है। न्यायमूर्ति चंद्र धारी सिंह ने कहा कि शिकायतकर्ता, जिनकी शिकायत पर सुनीता केजरीवाल को समन भेजा गया था।

पिछले कई मौकों पर हाईकोर्ट के सामने नहीं हुए पेश

नोटिस तामील होने के बावजूद पिछले कई मौकों पर हाईकोर्ट के समक्ष पेश नहीं हुए हैं। अदालत ने कहा कि यदि वह नोटिस भेजे जाने के बाद अगली सुनवाई की तारीख पर उपस्थित होने में विफल रहते हैं, तो मामला आगे बढ़ेगा।

अदालत 10 दिसंबर को करेगी अगली सुनवाई

अदालत ने मामले को आगे की कार्यवाही के लिए 10 दिसंबर को सूचीबद्ध किया है। हाईकोर्ट ने कहा कि अंतरिम आदेश, जिसके तहत उसने सुनीता केजरीवाल को तलब करने के निचली अदालत के आदेश पर रोक लगाई थी, जारी रहेगा।

भाजपा नेता (Delhi BJP) ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि पूर्व मुख्यमंत्री की पत्नी ने जनप्रतिनिधित्व (आरपी) अधिनियम के प्रविधानों का उल्लंघन किया है। खुराना ने दावा किया है कि सुनीता केजरीवाल साहिबाबाद विधानसभा क्षेत्र (संसदीय क्षेत्र गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश और दिल्ली के चांदनी चौक विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची में मतदाता के रूप में पंजीकृत थीं।

अधिनियम की धारा 31 के तहत कार्रवाई की हुई थी मांग

जो जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 17 का उल्लंघन है। उन्होंने दावा किया है कि सुनीता केजरीवाल को अधिनियम की धारा 31 के तहत अपराधों के लिए दंडित किया जाना चाहिए, जो झूठी घोषणाएं करने से संबंधित है। सुनवाई के दौरान सुनीता केजरीवाल की ओर से पेश अधिवक्ता ने तर्क दिया था कि ट्रायल कोर्ट का आदेश उचित विचार के बिना पारित किया गया था।

अधिवक्ता ने दलील दी कि जब सुनीता केजरीवाल ने अपना निवास स्थान बदला, तो उन्होंने अधिकारियों को एक घोषणा दी थी और उनका नाम पिछली मतदाता सूची से हटाना अधिकारियों का काम था और इसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने कहा कि रिकॉर्ड में ऐसा कोई सुबूत नहीं है जो यह दर्शाता हो कि उनके मुवक्किल ने कोई गलत बयान दिया था।

"विकसित भारत @2047" थीम के साथ भारत मंडपम में 14 नवंबर से 27 नवंबर तक आयोजित होगा सरस आजीविका मेला

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित 43वें विश्व व्यापार मेले में एक बार फिर परंपरा, क्राफ्ट, कला एवं संस्कृति से सराबोर विकसित भारत@2047 थीम के साथ, 14 नवंबर से 27 नवंबर तक प्रसिद्ध सरस आजीविका मेला 2024 का आयोजन किया जा रहा है। *केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान (एनआईआरडीपीआर) द्वारा समर्थित* इस सरस आजीविका मेला 2024 में ग्रामीण भारत की शिल्पकलाओं का मुख्य रूप से प्रदर्शन किया जाएगा। 14 नवंबर से 27 नवंबर तक चलने वाले इस उत्सव में *31 राज्यों की 300 से अधिक महिला शिल्प कलाकार, 150 से अधिक स्टॉलों* पर अपनी-अपनी उत्कृष्ट प्रदर्शनी का प्रदर्शन करेंगे।

सरस आजीविका मेला के दौरान देश भर के 31 राज्यों के हजारों उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री होगी। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा यह एक मुहिम की शुरुआत की गई है जिससे कि हमारे देश के हस्तशिल्पियों और हस्तकारों को अपनी रोजगार शुरू करने का मौका मिल सके। ताकि

केंद्र सरकार द्वारा शुरू किया गया आत्मनिर्भर भारत का संकल्प व "वोकल फॉर लोकल" अभियान को बढ़ावा मिल सके। साथ ही प्रधानमंत्रीजी के ग्रामीण महिलाओं को *लखपति दीदी* बनाने का सपना भी साकार हो सके। सरस में इस बार लखपति दीदियों पर फोकस किया गया है। यही कारण है कि *सरस को पांच जोन में लखपति दीदियों के राज्यों के हिसाब से बांटा गया है।

सरस आजीविका मेला 2024 में कुछ उत्कृष्ट प्रदर्शन जो विभिन्न राज्यों से हैं वो इस प्रकार हैं -

झारखंड से ट्राइबल ज्वेलरी, हनी, मिक्स अचार, दाल, आम के अचार, फ्लोर, आर्गेनिक वेजीटेबल और मशाले, चावल, दाल, साबुन के साथ ही स्नैक्स में हाथ के बनाए हुए चॉकलेट मशहूर रहेंगे। कर्नाटका से वुडेन खिलौने, पेपर, कॉफी पाउडर, कार्डामॉम क्लाउथ मेटेरियल, हनी,मिक्सड पीकल, जैगरी, पेंटिंग, वुडेन हेंडीक्राफ्ट. साथ ही केरला से कोकोनट ऑयल, कार्डामॉम,पेपर, मिस्लेनियस हेंडलुम आइटम, बनाना चिप्स, स्नैक्स, हेडमेड चॉकलेट, मशाले, क्ले डेकोरेटिव आइटम। लद्दाख से ड्राई फ्रूट्स, हेंड एमब्रोडरी वर्क, कार्पेट, लेदर पर्स और तेल। मध्य प्रदेश से मिस्लेनियस हेंडलुम आइटम, चंधेरी साड़ी, जैगरी, बैंबू प्रोडक्ट, दुपट्टा, गोंद, डेकोरेटिव आइटम। महाराष्ट्र से एमब्रोडरी ड्रेस, वुडेन खिलौने, लेमन पिकल। मणीपुर से वाटर हायसिन्थ प्रोडक्ट, मिजोरम से कड़ी पाउडर, ब्लैक पेपड़, नागालैंड से बासकेट, सैंडल, ट्राइबल ज्वेलरी, ओडिशा से सबाई हेंडीक्राफ्ट, काश ग्रास, तासर साड़ी, पंजाब से जूट बैग, कुशा मैट्स, कुची हेंडीक्राफ्ट, वुलेन जैकट। पुडुचेड़ी से बेड्स ज्वेलड़ी, इमीटेशन ज्वेलड़ी।

राजस्थान से ब्लॉक प्रिंटेड बेडशीट, आर्टीफैक्ट्स और आयरन टुल्स प्रोडक्ट, तमिलनाडु के पारंपरिक कपड़े और स्पेशल साड़ी आदि। तेलंगाना से स्पेशल साड़ी, त्रिपुड़ा के पारंपरिक कपड़े। उत्तराखंड के आर्गेनिक दालें, ग्रास बॉक्स, टेराकोटा आइटम, ब्लॉक प्रिंटेड बेडशीट, आयरन टुल्स प्रोडक्ट। उत्तर प्रदेश से हेंड एमब्रोडरी वर्क, पॉटरी वर्क, स्टोल, डिजायनर बेडशीट, शिल्क साड़ी, मेटल डेकोरेटिव आयटम। वेस्ट बंगाल से होम डेकोर प्रोडक्ट, बैंगल, ज्वेलड़ी, कांथा स्टीच आदि रहेंगे।

अंडमान एंड निकोबार से बैंबू प्रोडक्ट, अरुणाचल प्रदेश से पारंपरिक कपड़े, बैंबू प्रोडक्ट्स, आसाम से असामीज कपड़े के मेटेरियल, वाटर हायसिन्थ प्रोडक्ट्स, केन एंड बैंबू प्रोडक्ट्स, आंध्रप्रदेश से साउथ इंडियन पिकल, तेल, हर्बल हनी, वुडेन हेंडीक्राफ्ट, साड़ी और सॉफ्ट खिलौने आदि रहेंगे। बिहार से मधुबनी पेंटिंग, सिल्क साड़ी, सोलर टार्च, लाह की चूड़ियां और प्राकृतिक शहद रहेंगे। छत्तीसगढ़ से कॉटन सूट, फुलकारी सूट, सिल्क साड़ी, मेटल आर्ट, बेल मेटल, ड्राई फ्रूट्स और स्नैक्स, पापड़, आम के अचार और हल्दी पाउडर वहीं, गुजरात से मिस्लेनियस हेंडलूम आइटम, सिल्क साड़ी, दुपट्टा, बेल मेटल, गारलेंड्स, वुडेन हेंडीक्राफ्ट, पैटचित्रा के साथ साथ बेड डेकोरेटिव आइटम रहेंगे। जबकि गोवा से कुची हेंडीक्राफ्ट्स और स्नैक्स रहेंगे। हरियाणा से कॉटन सूट, साड़ी, दुपट्टा, टेराकोटा आइटम, क्लाउथ मेटेरियल, ड्रेस मेटेरियल, ज्वेलड़ी, स्नैक्स में मशहूर महुआ लड्डू। हिमाचल प्रदेश से मिस्लेनियस हेंडलुम आइटम, साक्स, हेंडबैग, साबुन वहीं, जम्मु कश्मीर से गोल्डन ग्रास प्रोडक्ट, कुची हेंडीक्राफ्ट, क्लाउथ मेटेरियल आदि।

इसके साथ ही प्राकृतिक खाद्य पदार्थ भी फूड स्टाल पर मौजूद होंगे, प्राकृतिक खाद्य पदार्थों के रूप में अदरक, चाय, दाल, कॉफी, पापड़, एपल जैम और अचार आदि उपलब्ध रहेंगे

केंद्र ने राज्यों से कहा 'अपने अपने स्टेट में लगाएं न्यूक्लियर प्लांट', परमाणु ऊर्जा में अभी किस पायदान पर है देश?

परिवहन विशेष

नई दिल्ली। देश में ऊर्जा उत्पादन में स्वच्छ ऊर्जा का योगदान बढ़ाने और परमाणु ऊर्जा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने राज्यों से परमाणु रिएक्टर स्थापित करने की अपील की है। खासकर उन राज्यों से जहां थर्मल पावर प्लांट की लाइफ खत्म हो रही है और कोयला पहुंचाना भी मुश्किल प्रक्रिया है। इससे जहां देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद मिल सकेगी, वहीं दूसरी ओर जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होगी।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने मंगलवार को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के ऊर्जा मंत्रियों संग बैठक की। इसमें उन्होंने कोयला संसाधनों से दूर स्थित राज्यों को परमाणु आधारित पावर प्लांट स्थापित करने की सलाह दी।

केंद्र सरकार की ओर से यह अपील देश में तेजी से बढ़ती बिजली की मांग को ध्यान में रखते हुए भी उठाया गया है। केंद्रीय बजट में सरकार ने छोटे पैमाने के परमाणु रिएक्टरों की स्थापना के लिए निजी निवेशकों के साथ साझेदारी की बात भी कही थी, जिससे बढ़ती ऊर्जा जरूरतें पूरी हो सकें।

ट्रांसमिशन प्रणाली में सुधार पर जोर

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि सभी राज्य व केंद्र शासित प्रदेश उन स्थानों पर परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने पर विचार

करें, जहां कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट की उम्र करीब-करीब पूरी हो आई है।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने राज्यों से पॉवर पावर यूटिलिटीज की पहचान करने और उसे स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टिंग करने की भी सलाह दी ताकि ऊर्जा क्षेत्र में निवेश का लक्ष्य भी पूरा हो सके। मनोहर लाल ने बैठक में अक्षय ऊर्जा क्षमता को बढ़ाने के साथ-साथ ट्रांसमिशन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

20 गीगावॉट का है लक्ष्य

बता दें कि फिलहाल देश में 24 परमाणु ऊर्जा संयंत्र संचालित हो रहे हैं, जिनका प्रबंधन न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL) द्वारा किया जाता है। NPCIL एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है, जो परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत आता है और इसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है।

फिलहाल, भारत की परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से विद्युत उत्पादन क्षमता लगभग 8 गीगावॉट है। भारत का लक्ष्य इसे 2032 तक 20 गीगावॉट से अधिक तक पहुंचने का है।

भारत ने एकमात्र जी20 राष्ट्र है, जो अपने जी एमिशन लक्ष्य को तय समय से पहले पूरा करने की दिशा में काम कर रहा है। भारत का लक्ष्य है कि 2030 तक 500 गीगावॉट की अक्षय ऊर्जा ग्रिड में जोड़ी जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2070 तक भारत को कार्बन उत्सर्जन में नेट-जीरो बनाने का भी वादा किया है।

कोहरे की मार से थमी ट्रेनों की रफ्तार, कई फ्लाइट भी हुईं डायवर्ट; यहां देखें पूरी लिस्ट

परिवहन विशेष

राजधानी दिल्ली में बुधवार को घना छाया तो लोगों का जीवन पूरी प्रभावित हो गया। इस दौरान कोहरे के चलते कई विशेष ट्रेनें भी देरी स्टेशनों पर पहुंचीं। इससे लोगों को काफी समस्या का सामना करना पड़ा। आइम हम आपको इस लेख में बताएंगे कि आखिर आज कौन-कौन सी प्रमुख और लोकल ट्रेनें देरी से चली हैं।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बुधवार सुबह को इस सीजन का सबसे ज्यादा कोहरा देखा गया।राजधानी में कोहरा बढ़ने से लोगों की समस्या भी बढ़नी शुरू हो गई है। आज सुबह दृश्यता का स्तर बहुत कम रहा। इसके चलते कई विशेष और लोकल ट्रेनें प्रभावित हुई हैं।

वहीं, कोहरे का आलम यह रहा कि आईजीआई एयरपोर्ट पर बुधवार सुबह साढ़े आठ बजे दृश्यता का स्तर शून्य रह गया। सड़कों व आबादी वाले क्षेत्रों में भी इसका खासा असर देखने को मिला। जनजीवन भी घने कोहरे से व्यापक स्तर पर प्रभावित हुआ।

उधर, कोहरे के चलते बच्चों को स्कूल और बड़ों को दफ्तर या अपने कार्यस्थल जाने में काफी परेशानी हुई। सुबह नौ बजे तक भी वाहनों की हेडलाइट जलाकर सफर किया जा रहा था।

मौसम विभाग के अनुसार, इस कोहरे की वजह से तापमान में भी आंशिक गिरावट देखने को मिली है। मंगलवार को न्यूनतम तापमान जहां सामान्य से तीन डिग्री ऊपर 17.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया था, जबकि आज यानी बुधवार को यह 0.9 डिग्री गिरकर सामान्य से दो डिग्री ऊपर 17.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड हुआ।

कई ट्रेनें चल रही लेट

वहीं, संरक्षा कार्य व अन्य परिचालन कारणों से कई ट्रेनें पहले से विलंब से चल रही थी। अब कोहरा का प्रकोप भी शुरू हो गया है, जिससे दृश्यता कम होने के कारण ट्रेनों की गति कम होने लगी है।

लंबी दूरी की कई ट्रेनें लेट

बता दें कि बुधवार को लंबी दूरी की कई ट्रेनों के साथ ही लोकल ट्रेनें भी विलंब से अपने गंतव्य पर पहुंची। अधिकांश लोकल ट्रेनें 30 मिनट से एक घंटे के विलंब से चल रही है।

छह घंटे देरी से चल रही नई दिल्ली-राजेंद्र नगर विशेष

उधर, नई दिल्ली-राजेंद्र नगर विशेष लगभग छह घंटे के देरी से शाम सवा सात बजे और नई दिल्ली-भागलपुर त्योहार विशेष 5.10 घंटे के विलंब से अपराह्न 3.40 पर रवाना होगी।

इनके अलावा आनंद विहार टर्मिनल से मुजफ्फरपुर सुपरफास्ट विशेष सात घंटे, मुजफ्फरपुर क्लोन एक्सप्रेस चार घंटे और गया क्लोन एक्सप्रेस 2.10 घंटे की देरी से चलेगी।

देरी से चलने वाली लंबी दूरी की प्रमुख ट्रेनें

बेगुसराय-नई दिल्ली हमसफर-सवा नौ घंटे

दानापुर-आनंद विहार टर्मिनल जनसाधारण एक्सप्रेस-साढ़े आठ घंटे

मुजफ्फरपुर-आनंद विहार टर्मिनल सुपरफास्ट विशेष-सात घंटे

डिब्रुगढ़- नई दिल्ली हमसफर-साढ़े पांच घंटे

भागलपुर-नई दिल्ली विशेष-साढ़े चार घंटे

सिलचर-नई दिल्ली संपर्क क्रांति एक्सप्रेस-सवा तीन घंटे

अगरतल्ला -आनंद विहार टर्मिनल तेजस राजधानी-तीन घंटे

श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-डा. अंबेडकर नगर विशेष-तीन घंटे

डिब्रुगढ़-नई दिल्ली राजधानी-सवा तीन घंटे

कुच्चुवेली -चंडीगढ़ संपर्क क्रांति -ढाई घंटे

देरी से चलने वाली लोकल ट्रेनें-

होशियारपुर-आगरा छावनी-पौने दो घंटे

पलवल-गाजियाबाद विशेष-डेढ़ घंटे

बुलंदशहर-तिलकब्रिज विशेष-डेढ़ घंटे

मथुरा जंक्शन-नई दिल्ली मेमू-डेढ़ घंटे

पानीपत-गाजियाबाद मेमू-एक घंटा

सहारनपुर-पुरानी दिल्ली ईएमयू-एक घंटा

पानीपत-नई दिल्ली विशेष-एक घंटा

जींद-नई दिल्ली मेमू-एक घंटा

कुरुक्षेत्र-हजरत निजामुद्दीन विशेष-एक घंटा

मथुरा जंक्शन-गाजियाबाद विशेष-45 मिनट

कई फ्लाइट डायवर्ट की गई

कोहरे के कारण एयरपोर्ट पर दृश्यता रही शून्य। वहीं, कोहरे के चलते आठ विमान जयपुर डायवर्ट किए गए हैं। हैदराबाद, बैंगलुरु, चेन्नई और पुणे से आने वाली फ्लाइट भी डायवर्ट की गई। उधर, एक फ्रैंकफुट से दिल्ली आने वाली फ्लाइट भी जयपुर डायवर्ट की गई। बताया गया कि कैट तीन लागू कर दिया था। जिन विमानों में कैट तीन की क्षमता नहीं थी, वह डायवर्ट की गई।

दिल्ली की हवा देश में सबसे ज्यादा जहरीली, पहली बार गंभीर श्रेणी में पहुंचा AQI; ग्रेप-3 को लेकर CAQM ने बताया अपना प्लान

परिवहन विशेष

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बुधवार को वायु गुणवत्ता (AQI) गंभीर श्रेणी में पहुंच गई है। यह पहली बार है जब राजधानी में एक्यूआई 400 के पार पहुंचा हो। वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में पहुंचने के बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) का कहना है कि ग्रेप-4 (GRAP-4) लागू करने के लिए बृहस्पतिवार को समीक्षा की जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली में बुधवार को वायु गुणवत्ता (AQI) गंभीर श्रेणी में पहुंच गई है। यह पहली बार है जब राजधानी में एक्यूआई 400 के पार पहुंचा हो। वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में पहुंचने के बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) का कहना है कि ग्रेप-4 (GRAP-4) लागू करने के लिए बृहस्पतिवार को समीक्षा की जाएगा।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) मंगलवार शाम 4 बजे 334 रहा था। बुधवार सुबह 9 बजे हवा 366 के साथ 'बहुत खराब' थी।

गुरुग्राम से दिल्ली की कनेक्टिविटी कैसे होगी बेहतर? लाखों वाहन चालकों को राहत के लिए बन रहा प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

श्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित कर पांच किलोमीटर के अंतराल पर इंटरचेंज यानी जंक्शन की सुविधा पर जोर देना होगा। सभी जंक्शन क्लोवरलीफ की तरह बनाने होंगे ताकि किसी भी तरफ से आने वाले वाहन पूरी स्पीड के साथ आगे दूसरी तरफ निकल जाएं। इससे कहीं भी ट्रैफिक का दबाव नहीं दिखाई देगा। कई शहरों में भी श्री लेयर एलिवेटेड रोड बनाने के ऊपर जोर दिया जा रहा है।

गुरुग्राम। आईटी, आईटी इनेबल्ड, टेलीकाम, ऑटोमोबाइल से लेकर मेडिकल टूरिज्म सेक्टर में विश्वस्तरीय पहचान बनाने वाली साइबर सिटी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से बिल्कुल सटी हुई है। इसके बाद भी एक-दूसरे इलाके में जाने-आने से पहले दस बार सोचना पड़ता है। इसके पीछे मुख्य कारण दोनों इलाकों को जोड़ने वाली सभी सड़कों पर ट्रैफिक का भारी दबाव है।

पीक ऑवर ही नहीं बल्कि 24 घंटे सड़कों पर वाहनों का दबाव है। दोनों के बीच इतनी जगह भी नहीं बची कि एक भी नई सड़क बनाई जा सके। ऐसे में जानकारों का मानना है कि श्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित करने पर तत्काल प्रभाव से जोर देना होगा। इसमें जितनी देरी की जाएगी, उतनी ही समस्याएं विकराल होती चली जाएंगी। वैसे तो दिल्ली-गुरुग्राम को कई सड़कें आपस में जोड़ती हैं, लेकिन इनमें सबसे मुख्य है दिल्ली-जयपुर हाईवे।

5 लाख वाहन रोजाना क्रॉस करते हैं सिरहौल बॉर्डर

यह दिल्ली-गुरुग्राम के बीच लाइफ लाइन के रूप में है। हाईवे पर दिल्ली में धौलाकुआं से लेकर हरियाणा-राजस्थान सीमा तक ट्रैफिक का दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसमें से भी धौलाकुआं से लेकर आइएमटी मानेसर तक ट्रैफिक का दबाव सबसे अधिक है। दबाव का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन औसतन साढ़े चार से पांच लाख वाहन सिरहौल बॉर्डर को क्रॉस करते हैं।

द्वारका एक्सप्रेस-वे के पूरी तरह चालू होने के बाद केवल 30 प्रतिशत तक ट्रैफिक का दबाव कम होने की उम्मीद है। ऐसे में दिल्ली-जयपुर हाईवे को एलिवेटेड हाईवे के रूप में विकसित करना ही समस्या का स्थायी समाधान है। इसके लिए अलग से जमीन की व्यवस्था भी नहीं करनी होगी।

कई अन्य विकल्प पर भी देना होगा जोर

दिल्ली-एनसीआर में ट्रैफिक का दबाव बढ़ने के पीछे मुख्य कारण है आबादी का दबाव। सार्वजनिक परिवहन सुविधा बेहतर न होने की वजह से दिल्ली-एनसीआर में काम करने वाले लोग नजदीक ही रहना पसंद करते हैं। इसे ध्यान में रखकर दिल्ली-अलवर के बीच रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कॉरिडोर विकसित करने की योजना 10 साल पहले बनाई गई थी ताकि दिल्ली में काम करने वाले लोग मानेसर से लेकर अलवर तक रह सकें।

आज तक इस योजना के ऊपर जमीनी स्तर पर एक इंच भी काम आगे नहीं बढ़ा। यदि समय से योजना पूरी हो जाती तो आज दिल्ली से अलवर के बीच की तस्वीर कुछ और होती। इसके अलावा गुरुग्राम-कापसहेड़ा रोड को भी एलिवेटेड बनाने की आवश्यकता है। सिरहौल बॉर्डर से पहले दिल्ली-जयपुर हाईवे से लेकर गुरुग्राम-फरीदाबाद रोड एवं आगे गुरुग्राम-सोहना हाईवे तक अरावली के ऊपर से होते हुए एलिवेटेड हाईवे विकसित करने की आवश्यकता है।

सोहना तक करना होगा मेट्रो का विस्तार

दिल्ली की तरफ से आने वाले जिन लोगों को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर जाना है वे सिरहौल बॉर्डर से पहले एलिवेटेड हाईवे पर चले जाएंगे। कुछ ही मिनट में वाहन दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर चले जाएंगे। पुराने गुरुग्राम के इलाके में ही नहीं बल्कि मानेसर एवं सोहना तक मेट्रो का विस्तार करना होगा।

इससे आंतरिक सड़कों पर भी ट्रैफिक का दबाव कम होगा। धौलाकुआं से मानेसर के बीच रोपवे सिस्टम विकसित करने के ऊपर भी जोर देने से काफी लाभ होगा। केंद्रीय भूतल सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने कई साल पहले इसके ऊपर चर्चा शुरू की थी, लेकिन बात आगे नहीं बढ़ी।

इस संबंध में एनएचएआई के पूर्व तकनीकी सलाहकार जेएस सुहाग ने कहा, "मैंने लगभग 10 साल पहले ट्रैफिक दबाव को कम करने के लिए क्या किया जाए, इस बारे में शंघाई जाकर अध्ययन किया था। वहां देखा कि इतना बड़ा शहर होने के बाद भी ट्रैफिक दबाव नहीं क्योंकि श्री लेयर एलिवेटेड रोड की सुविधा पूरे शहर में है। लगभग सभी हाईवे भी श्री लेयर एलिवेटेड हैं। दिल्ली-गुरुग्राम के बीच श्री लेयर एलिवेटेड हाईवे विकसित करने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं बचा है। जगह है नहीं कि नई सड़क बनाई जाए। यही नहीं साइबर सिटी की सभी मुख्य सड़कों को शंघाई की तरह एलिवेटेड करना होगा।"

क्या बोले विधायक?

गुड़गांव विधायक मुकेश शर्मा ने कहा, रदिल्ली-गुरुग्राम के बीच हाईवे को एलिवेटेड कराने की मांग मैं केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के सामने रख चुका हूं। इस दिशा में काम तेज कराने के लिए मैं जल्द ही उनसे मुलाकात करूंगा। केंद्रीय मंत्री खुद महसूस करते हैं कि दिल्ली-गुरुग्राम के बीच ट्रैफिक का काफी दबाव है। ऐसे में उम्मीद है कि जल्द ही हाईवे को एलिवेटेड कराने की योजना सिरे चढ़ेगी। साइबर सिटी की सभी मुख्य सड़कों को भी एलिवेटेड कराना उनकी प्राथमिकता में है। वह जल्द ही प्रदेश सरकार के सामने इस विषय को प्रमुखता से रखेंगे।"

गाजियाबाद में धड़ाधड़ हो रही प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री, एक दिन में 462 लोगों को मिला मालिकाना हक

गाजियाबाद में अधिवक्ताओं की हड़ताल के बाद मंगलवार को तहसील में प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री का काम शुरू हो गया है। मंगलवार को एक दिन में 462 संपत्तियों की रजिस्ट्री हुई। वहीं विदेश से आए लोगों ने रजिस्ट्री कराई और वापस चले गए। कुछ लोगों ने पावर ऑफ अटॉर्नी बनवाई। इसके अलावा निबंधन कार्यालय में विवाह का पंजीकरण कराने वालों की भीड़ रही।

ग्रेटर नोएडा। मैं कनाडा में रहता हूं, मेरा वसुंधरा में एक फ्लैट है, जिसकी रजिस्ट्री नहीं हुई थी। कई दिन से रजिस्ट्री कराने के लिए प्रयास कर रहा था, तहसील में अधिवक्ताओं की हड़ताल के कारण रजिस्ट्री बंद होने के कारण परेशानी हो रही थी, फिर भी इस उम्मीद में मैं कनाडा से तीन दिन पहले भारत आया और यहां पर एक होटल में रुका।

संपत्ति की रजिस्ट्री कराने के बाद भरी विदेश की उड़ान

सोमवार को तहसील आया, लेकिन हड़ताल के कारण रजिस्ट्री नहीं हो सकी, अब मुझे वापस कनाडा जाना है और कल ड्यूटी ज्वाइन करनी है। शुक्र है कि आज हड़ताल खत्म हो गई और मेरे फ्लैट की रजिस्ट्री हो गई, अब मैं कनाडा वापस जा सकता हूं। यह कहना है मंगलवार को रजिस्ट्री कराने के लिए तहसील पहुंचे आशुतोष दत्त का।

अधिवक्ताओं की हड़ताल से परेशान हो रहे थे लोग

इस तरह कई अन्य लोग भी हैं, जो छुट्टी लेकर विदेश से गाजियाबाद आए थे, यहां पर उनको संपत्ति की रजिस्ट्री करानी थी, लेकिन पांच नवंबर से अधिवक्ताओं की हड़ताल के कारण वे परेशान हो रहे थे, मंगलवार को सात दिन के बाद तहसील में संपत्ति की रजिस्ट्री का कार्य शुरू हुआ तो उन्होंने संपत्ति की रजिस्ट्री कराई और वापस विदेश गए।

पावर ऑफ अटार्नी कराने वालों की संख्या भी बढ़ी

इनके अलावा विदेश से गाजियाबाद आए कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो किसी कारण संपत्ति की रजिस्ट्री नहीं करा सके। उनको विदेश जाना आवश्यक था, ऐसे में उन्होंने अपने परिवार के लोगों के नाम पावर ऑफ अटार्नी कर दी है।

अधिवक्ता अशोक कुमार वर्मा ने बताया कि ऐसा करने से अब भले ही खरीदार यहां पर न रहे, लेकिन संपत्ति उनके नाम पर पावर ऑफ अटार्नी के माध्यम से उनके करीबी खरीद सकेंगे, हड़ताल के कारण पावर ऑफ अटार्नी कराने वालों की संख्या भी बढ़ी है।

शादी का पंजीकरण कराने भी पहुंचे दंपत्ती

देवोत्थान एकादशी का पर्व होने के कारण मंगलवार को निबंधन कार्यालयों में शादी का पंजीकरण कराने के लिए बड़ी संख्या में दंपत्ती पहुंचे। इनमें कई लोग ऐसे भी रहे, जिन्होंने मंगलवार को ही शादी की और निबंधन कार्यालय जाकर पंजीकरण कराया। गाजियाबाद के एआइजी स्टांप पुष्पेंद्र कुमार ने बताया कि मंगलवार को जिले में कुल 462 संपत्ति की रजिस्ट्री हुई है। इसके अलावा शादी का पंजीकरण 32 लोगों ने करवाया है।

30 हजार किसानों को कब मिलेगा मुआवजा, यमुना प्राधिकरण ने दिया बड़ा अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा के 30 हजार किसान और 20 हजार घर खरीदारों से जुड़ी बड़ी खबर है। शासन की तरफ से फैसला ना होने के कारण किसानों को अतिरिक्त मुआवजा का मामला अटका हुआ है। ये किसान पिछले 10 सालों से 64 .7 फीसदी अतिरिक्त मुआवजे की मांग कर रहे हैं। यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी अरुणवीर सिंह ने किस्त को लेकर बड़ी जानकारी दी है।

ग्रेटर नोएडा। 30 हजार किसान और 20 हजार घर खरीदारों का फैसला दो माह से शासन में अटका है । सुरक्षा रीयल्टी को लेकर यमुना प्राधिकरण की ओर से भेजे गए प्रस्ताव पर शासन स्तर से फैसला ना हो पाने के कारण किसानों को अतिरिक्त मुआवजा वितरण अटका हुआ है।

यमुना प्राधिकरण किसानों को मुआवजा वितरण के लिए दो बार तिथि दे चुका है, लेकिन दोनों ही बार किस खाली हाथ रह गए। यमुना एक्सप्रेसवे (Yamuna Expressway) का संचालन कर रही कंपनी जेपी इंफ्राटेक का सुरक्षा रीयल्टी ने अधिग्रहण किया है।

30 हजार किसान पिछले 10 साल से कर रहे मुआवजे की मांग

यमुना एक्सप्रेसवे के लिए जमीन अधिग्रहण से प्रभावित गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा और आगरा के तकरीबन 30 हजार किसान पिछले 10 साल से 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त मुआवजे की मांग कर रहे हैं। पहले मामला कोर्ट में, फिर एनसीएलटी में जाने के कारण किसानों को मुआवजा नहीं मिल सका।

जेपी इंफ्राटेक का सुरक्षा रीयल्टी द्वारा अधिग्रहण होने के बाद किसानों को मुआवजा जल्द वितरण होने की उम्मीद जगी थी, लेकिन एनसीएलटी के फैसले ने किसानों के उम्मीदों पर पानी फेर दिया, हालांकि एनसीएलएटी के फैसले में किसानों को मुआवजा वितरण के लिए 1334.31 करोड रुपए देने की आदेश के बाद एक बार फिर मुआवजे की उम्मीद बंधी।

दीपावली से पहले मुआवजे की पहली किस्त देने की हुई थी बात

प्राधिकरण ने दावा किया था कि 30 सितंबर तक किसानों को मुआवजे की पहली किस्त का वितरण हो जाएगा। लेकिन किसानों को मुआवजा वितरण नहीं हो पाया। इसके बाद प्राधिकरण ने दावा किया था कि दीपावली से पहले मुआवजे की पहली किस्त दे दी जाएगी। एक बार फिर किसान खाली हाथ रह गए।

दरअसल सुरक्षा रीयल्टी को लेकर यमुना प्राधिकरण के प्रस्ताव पर शासन स्तर से फैसला होना है। इसके तहत यह तय होगा कि यमुना प्राधिकरण मुआवजा वितरण के लिए कुल राशि का 21 प्रतिशत यानी 360 करोड़ का भुगतान करेगा। शासन स्तर से अभी तक इस पर स्वीकृति नहीं दी गई है। इसलिए किसानों को मुआवजा वितरण नहीं हो पा रहा है।

जहां एक तरफ किसान मुआवजा को लेकर परेशान हैं वहीं दूसरी तरफ जेपी इंफ्राटेक की आवासीय परियोजना में फंसी 20 हजार घर खरीदार भी परेशान है। यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ अरुणवीर सिंह का कहना है कि शासन से स्वीकृति मिलते ही मुआवजे की पहली किस्त किसानों को जारी कर दी जाएगी।

गंगा का मैल सख्ती व जवाबदेही से ही दूर होगा

ललित गर्ग

कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश-दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा।

गंगा की सफाई, उसे प्रदूषण मुक्त करने एवं नदियों के माध्यम से आर्थिक विकास, धार्मिक आस्था एवं पर्यटन की संभावनाओं को तलाशने की दृष्टि से वर्तमान उत्तरप्रदेश सरकार एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तमाम प्रयासों के बावजूद गंगा आज भी मैली क्यों है? यह सवाल सरकार के नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए लंबे समय से चल रही तमाम योजनाओं और कार्यक्रमों की पोल खोलते हैं। सरकार की ओर से घोषणाएं करने में शायद ही कभी कमी की जाती है, मगर उन पर अमल को लेकर कहां चूक या लापरवाही बरती जा रही है, इस पर गौर करना कभी जरूरी नहीं समझा जाता। यह गौर करना राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की उस टिप्पणी के कारण भी जरूरी हो गया है, जिसमें कहा गया है कि प्रयागराज में गंगा का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। एनजीटी का यह खुलासा इसलिये भी चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि कुछ ही माह बाद यानी जनवरी 2025 की पौष पूर्णिमा से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत होने वाली है।

कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश-दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। सवाल इस बात को लेकर भी उठेंगे कि विभिन्न सरकारों द्वारा शुरू की गई अनेक महत्वाकांक्षी व भारी-भरकम योजनाओं के बावजूद गंगा को साफ करने में हम सफल क्यों नहीं हो पाए हैं। आखिर कौन है गंगा को प्रदूषित करने के गुनहगार? सरकारों को यह समझना होगा कि उसे केवल गंगा को साफ ही नहीं करना, बल्कि उसकी निर्मलता एवं अविरलता के लिये एक अनूठा उदाहरण भी पेश करना है। ऐसा करके ही देश की अन्य नदियों को भी प्रदूषणमुक्त करने की दिशा में सकारात्मक वातावरण निर्मित किया जा सकेगा। यह जानकारी भी सामने आई कि उत्तरकाशी में सुरंग के निर्माण के कारण ढेर बने मलबे एवं कचरे को गंगा नदी के किनारे डाल दिया गया। औद्योगिक कारखानों का जहरीला कचरा ही नहीं बल्कि सरकार की अन्य विकास योजनाएं ही गंगा को प्रदूषित करने का जरिया बन रही है, जो अधिक शर्मनाक एवं चिन्ताजनक है। गंगा नदी एवं अन्य नदियों में उद्योगों से विभिन्न रसायन, चीनी मिल, भट्टी, ग्लिस्रिन, टिन, पेंट, साबुन, कताई, रेयान, सिल्क, सूत, प्लास्टिक थैलियां-बोतले आदि जहरीला कचरा बड़ी मात्रा में सरकार की चेतावनियों के बावजूद मिल रहा है।

गंगा कायाकल्प का दृष्टिकोण 'अविरल धारा' (सतत प्रवाह), 'निर्मल धारा' (प्रदूषणरहित प्रवाह) को प्राप्त करके और भूगर्भीय और पारिस्थितिक अखंडता को सुनिश्चित करके नदी की अखंडता को बहाल करने की समग्र योजना और रखरखाव के बावजूद गंगा लगातार प्रदूषित हो रही है। जबकि सरकार क्रॉस-सेक्टोरल सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नदी बेसिन रणनीति को लागू करके गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने और पुनरोद्धार को सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है। यह पानी की गुणवत्ता और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार विकास को बनाए रखने की दृष्टि से गंगा नदी में न्यूनतम जैविक प्रवाह भी सुनिश्चित करता है। वर्ष 2014 से गंगा की सफाई का महत्वाकांक्षी अभियान 'नमामि गंगे' में अब तक करीब चालीस हजार करोड़ की लागत से गंगा की सफाई की करीब साढ़े चार सौ से अधिक परियोजनाएं आरंभ भी की गई हैं। इस परियोजना के अंतर्गत गंगा के किनारे स्थित शहरों में सीवर व्यवस्था को दुरुस्त करने, उद्योगों द्वारा बहाये जा रहे अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण के लिये शोधन संयंत्र लगाने, गंगा तटों पर वृक्षारोपण, जैव विविधता को बचाने, गंगा घाटों की सफाई के लिये काफी काम तो हुआ लेकिन अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। जो हमें बताता है कि जब तक समाज में जागरूकता नहीं आएगी और नागरिक अपनी जिम्मेदारी का अहसास नहीं करेंगे, गंगा मैली ही रह जाएगी। अधिकारियों की लापरवाही या फिर गड़बड़ियों की वजह से किसी बड़ी और बेहद महत्वपूर्ण पहलकदमी का भी हासिल शून्य कैसे हो सकता है, इसका उदाहरण गंगा का प्रदूषण है।

दरअसल, लगातार बढ़ती जनसंख्या का दबाव और गंगा तट पर स्थित शहरों में योजनाबद्ध ढंग से जल निकासी व सीवरेज व्यवस्था को अंजाम न दिये जाने से समस्या विकट हुई है। गंगा को साफ करने के लिये जरूरी है कि स्वच्छता अभियान एक निरंतर प्रक्रिया हो। एक बार की सफाई निष्प्रभावी हो जाएगी यदि हम प्रदूषण के कारकों को जड़ से समाप्त नहीं करते। इसके लिये गंगा के तट वाले राज्यों में पर्याप्त जलशोधन संयंत्र युद्ध स्तर पर लगाए जाने चाहिए। साथ ही गंगा सफाई अभियान की नियमित निगरानी होनी चाहिए। इसमें आधुनिक तकनीक का भी सहारा लिया जाना चाहिए। लोगों को बताया जाना चाहिए कि गंगा सिर्फ नदी नहीं है यह खाद्य शृंखला को संबल देने वाली तथा हमारी आध्यात्मिक यात्रा से भी जुड़ी है। गंगा में जहरीला कचरा बहाने वाले उद्योगों पर भी आर्थिक दंड लगाना चाहिए। इसी से यह उम्मीद की जा सकती है कि इसके जरिए मानव सभ्यता के लिए एक बेहद जरूरी नदी में फिर से जीवन भर सकेगा। वास्तव में गंगा एक संपूर्ण संस्कृति की वाहक रही है, जिसने विभिन्न साम्राज्यों का उत्थान-पतन देखा, किंतु गंगा का महत्व कम न हुआ। आधुनिक शोधों से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि गंगा की तलहटी में ही उसके जल के अद्भुत और चमत्कारी होने के कारण मौजूद है। यद्यपि औद्योगिक विकास ने गंगा की गुणवत्ता को दूषित किया है, किन्तु उसका महत्व यथावत है। उसका महात्म्य आज भी सर्वोपरि है। गंगा स्वयं में संपूर्ण संस्कृति है, संपूर्ण तीर्थ है, उन्नत एवं समृद्ध जीवन का आधार है, जिसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है।

'नमामि गंगे' परियोजना व स्वच्छ गंगा हेतु राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत प्रदेश में गंगा किनारे के 1,604 गांवों में 3,88,340 शौचालयों का निर्माण करवाकर उन्हें खुले में शौच से मुक्त गांव घोषित किया गया और नदी किनारे एक करोड़ 30 लाख पौधों का रोपण किया गया। गंगा को निर्मल बनाने के लिए घाट, मोक्षधाम, बायो डायवर्सिटी आदि से जुड़े 245 प्रोजेक्ट पर तेजी से काम हो रहा है। गंगा की 40 सहायक नदियों में प्रदूषित जल का प्रवेश रोकने के लिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार में 170 परियोजनाओं पर काम चल है। एक और राहत की खबर जो उम्मीद की किरण बन कर सामने आयी है कि गंगा में विषाक्त कचरा उड़ेलने वाली औद्योगिक इकाइयों में कमी आ रही हैं। सरकार के प्रयासों से गंगा के तटों का सौन्दर्यकरण भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, जिससे पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। मोदी सरकार ने एक सराहनीय पहल करके स्वच्छ गंगा कोष की स्थापना की है, जिसमें स्थानीय नागरिक व भारतीय मूल के विदेशी व्यक्ति और संस्थाएं आर्थिक, तकनीकी व अन्य सहयोग कर सकते हैं। स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें मिली विभिन्न भेंटों व स्मृति चिह्नों की नीलामी से प्राप्त 16 करोड़ 53 लाख रुपये की राशि इसी कोष में दी है।

यह खबर आई थी कि सरकार 2022 तक गंगा नदी में गंदे नालों के पानी को गिराने से पूरी तरह रोक देगी और इस मसले पर एक मिशन की तरह काम चल रहा है। लेकिन ताजा स्थितियां एवं गंगा का प्रदूषण बताता है कि इस नदी के निर्मलीकरण के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं की उपलब्धि वास्तव में कितनी है? नीतियों और योजनाओं के बरक्स उन पर अमल की यह तस्वीर राजनीति इच्छाशक्ति एवं प्रशासनिक लापरवाही को ही दर्शाती है। अन्यथा क्या कारण है कि नदियों के प्रदूषण को दूर करने के क्रम में सबसे ज्यादा जोर गंगा को स्वच्छ बनाने पर ही दिया गया, मगर इसका हासिल आज भी संतोषजनक नहीं है। सही मायनों में आज गंगा के उद्धार के लिये सरकार के साथ-साथ हर भारतीय को भगीरथ जैसा दायित्व निभाना होगा। तभी सदियों से अविरल बह रही जीवनदायी गंगा की प्रतिष्ठा एवं पवित्रता भी फिर से स्थापित हो सकेगी। फिर एनजीटी को यह न कहना पड़ेगा कि फलां जगह का गंगाजल आचमन करने लायक नहीं रह गया है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर

अतुल ग्रीनटेक ने देश भर में इलेक्ट्रिक वाहनों की पहुंच बढ़ाने के लिए एचपीसीएल के साथ की साझेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

अतुल ऑटो लिमिटेड की सहायक कंपनी अतुल ग्रीनटेक प्राइवेट लिमिटेड ने भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की पहुंच बढ़ाने के लिए हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ साझेदारी की घोषणा की है। इस सहयोग के माध्यम से अतुल ग्रीनटेक के इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर, एनर्जी और एनर्जी 2, हिंदुस्तान पेट्रोलियम के एचपी गैस वितरक नेटवर्क के माध्यम से बेचे जाएंगे। इस पहल का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देना है।

भारत में पेट्रोलियम उत्पादों के शोधन और वितरण में अपने व्यापक काम के लिए प्रसिद्ध एचपीसीएल अपने एचपी गैस वितरण नेटवर्क के साथ लाखों ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है। यह साझेदारी एचपीसीएल की व्यापक पहुंच और ग्राहक आधार का लाभ उठाकर एजीपीएल के ईवी समाधानों को देश भर में अधिक सुलभ बनाएगी। यह वितरण नेटवर्क एचपीसीएल वितरकों को एजीपीएल के एनर्जी और एनर्जी 2 मॉडल का विपणन और बिक्री करने में सक्षम बनाएगा, जो इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों पर सरकार के फोकस का समर्थन करेगा।

अतुल ग्रीनटेक के एनर्जी और एनर्जी 2 इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर विभिन्न क्षेत्रों में टिकाऊ परिवहन की मांग को पूरा करने के लिए बनाए गए हैं। एचपीसीएल के नेटवर्क के साथ, अतुल ग्रीनटेक के पास इन ईवी को वितरित करने के लिए एक विस्तारित प्लेटफ़ॉर्म होगा, जो पूरे भारत में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल परिवहन समाधानों की आवश्यकता को पूरा करने में मदद कर सकता है।

अतुल ऑटो के निदेशक डॉ. विजय केडिया ने कहा कि यह साझेदारी अतुल ग्रीनटेक की इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के प्रति प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण विकास को दर्शाती है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने और स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को आगे बढ़ाने के भारत के चल रहे प्रयासों के साथ संरेखित है। उन्होंने कहा कि इस सहयोग से ग्राहकों को लाभ मिलने की उम्मीद है, साथ ही देश के हरित परिवहन विकल्पों की ओर बढ़ने में योगदान मिलेगा।

त्योहारी मांग से अक्टूबर में यात्री वाहनों की थोक बिक्री में मामूली वृद्धि, बाइक से ज्यादा बिकी स्कूटर

परिवहन विशेष न्यूज

अक्टूबर 2024 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री में सालाना आधार पर बढ़त देखने के लिए मिली है। पिछले महीने कुल दोपहिया वाहनों की बिक्री सालाना आधार पर 14 प्रतिशत बढ़ी है। अक्टूबर 2024 में 2164276 इकाई की बिक्री हुई जो अक्टूबर 2023 की 1895799 तुलना में काफी ज्यादा है। आइए जानते हैं कि टू-व्हीलर की बिक्री में क्या अंतर देखने के लिए मिला है।

नई दिल्ली। यात्री वाहनों की थोक बिक्री अक्टूबर में सालाना आधार पर मामूली बढ़त के साथ 3,93,238 इकाई हो गई। अक्टूबर 2023 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री 3,89,714 इकाई थी। सोसायटी आफ इंडियन आटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) के मुताबिक, पिछले महीने कुल दोपहिया वाहनों की बिक्री सालाना आधार पर 14 प्रतिशत बढ़कर 21,64,276 इकाई हो गई, जबकि अक्टूबर 2023 में यह 18,95,799 इकाई थी।

स्कूटर और तिपहिया वाहनों की बिक्री

स्कूटर की बिक्री अक्टूबर में 22 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 7,21,200 इकाई रही। मोटरसाइकिल की थोक बिक्री पिछले महीने 11 प्रतिशत की बढ़त के साथ 13,90,696 इकाई हो गई, जबकि अक्टूबर 2023 में यह 12,52,835 इकाई थी। अक्टूबर में मोपेड की बिक्री घटकर 52,380 इकाई रह गई, जबकि एक वर्ष पूर्व इसी माह यह 53,162 इकाई थी। तिपहिया वाहनों की थोक बिक्री पिछले महीने मामूली गिरावट के साथ 76,770 इकाई रह गई, जबकि अक्टूबर 2023 में यह 77,344 इकाई थी।

अक्टूबर 2024 में दो प्रमुख त्योहार नवरात्रि और दिवाली होने से उपभोक्ता मांग बढ़ी, जिससे मोटर वाहन उद्योग को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिला। यात्री वाहनों ने 0.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ अक्टूबर में 3.93 लाख इकाइयों की अपनी उच्चतम बिक्री दर्ज की। दोपहिया वाहन खंड ने भी 2024 में अक्टूबर की अब तक की सबसे अधिक बिक्री दर्ज की। यह उच्च वृद्धि वाहन पंजीकरण आंकड़ों में भी परिलक्षित हुई। अक्टूबर 2024 में यात्री वाहनों और दोपहिया वाहनों दोनों के पंजीकरण में सालाना आधार पर 30 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी गई।

इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की बिक्री

अक्टूबर 2024 में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की बिक्री में बढ़ोतरी देखने के लिए मिले है। इसकी सालाना बिक्री में 85% की वृद्धि देखने के लिए मिली है। वहीं मासिक बिक्री में 54.61% की वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2024 में सबसे ज्यादा बिक्री ओला इलेक्ट्रिक के स्कूटर बिके है। इसी तरह TVS मोटर और बजाज की इलेक्ट्रिक गाड़ियों की भी बिक्री जमकर हुई है। इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर सेगमेंट की बिक्री बढ़कर 1,39,159 यूनिट तक पहुंच गई। अक्टूबर 2023 में बेची गई 75,165 यूनिट की तुलना में सालाना आधार पर बिक्री में 85.14% की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, सितंबर 2024 में बेची गई 90,007 यूनिट की तुलना में मासिक आधार पर 54.61% की बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है।

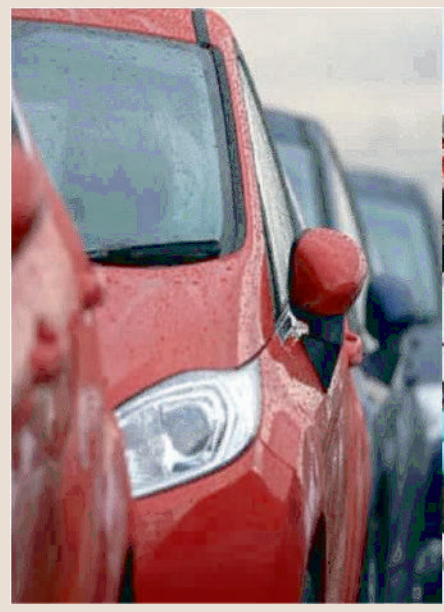

भारत चीन की तरह इलेक्ट्रिक वाहनों का 'प्रमुख उत्पादक' बनने की ओर अग्रसर: मार्क मोबियस

परिवहन विशेष न्यूज

प्रमुख वैश्विक निवेशक मार्क मोबियस ने कहा है कि भारत, जिसने दोपहिया वाहनों के साथ अपनी इलेक्ट्रिक वाहन यात्रा शुरू की थी, आने वाले वर्षों में चीन की तरह इलेक्ट्रिक वाहनों का "प्रमुख उत्पादक" बनने के लिए तैयार है।

पीएम ई-ड्राइव योजना के तहत ईवी की बिक्री में रिकॉर्ड उछाल आया है, जो ईवी अपनाने की बढ़ती गति को दर्शाता है। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्रमोशन स्कीम (ईएमपीएस) और पीएम ई-ड्राइव योजनाओं जैसी पहलों के माध्यम से 2024-25 में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री बढ़कर 5,71,411 इकाई हो गई।

इसी अवधि के दौरान ई-रिक्शा और ई-कार्ट सहित इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर्स की बिक्री 1,164 इकाई तक पहुंच गई, जबकि एल5 श्रेणी में इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर्स की बिक्री 71,501 इकाई तक पहुंच गई।

मोबियस ने आईएएनएस को बताया कि भारत उम्मीद से भी जल्दी इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रमुख उत्पादक बनने जा रहा है।

मोबियस ने कहा, ₹भारत ने छोटे ईवी के साथ शुरुआत की थी, लेकिन यह अंततः इलेक्ट्रिक वाहनों का एक प्रमुख उत्पादक बन जाएगा। चूंकि घरेलू बाजार इतना बड़ा है, इसलिए भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों का निर्यात करने की आवश्यकता नहीं है। वे स्थानीय बाजार की आपूर्ति के लिए आसानी से बड़ी संख्या में उत्पादन कर सकते हैं।"

भारत की ईवी यात्रा चीन के समान है जो अब दुनिया भर में प्रमुख खिलाड़ी है और यह उनके विशाल घरेलू बाजार के कारण संभव हुआ है।

उन्होंने आईएएनएस से कहा, "भारत भी उसी स्थिति में होगा और वैश्विक ईवी बाजार में बहुत अच्छे काम करने में सक्षम होगा।"

केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा हाल ही में 10,900 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ स्वीकृत पीएम ई-ड्राइव योजना 1 अक्टूबर से लागू हो गई है और 31 मार्च, 2026 तक लागू रहेगी।

इसका मुख्य उद्देश्य ईवी खरीद के लिए अग्रिम प्रोत्साहन देकर तथा चार्जिंग अवसंरचना के विकास को प्रोत्साहित करके इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर संक्रमण को गति प्रदान करना है।

मोबियस ने आगे कहा कि भारत में रचनात्मक आवेग आने वाले वर्षों में देश को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बना देगा।

उन्होंने आईएएनएस से कहा, "भारत की एक ताकत यह है कि यहां विभिन्न संस्कृतियों का संरक्षण किया जाता है। यहां अलग-अलग राज्य हैं, अलग-अलग भाषाएं हैं और अलग-अलग परंपराएं हैं। यह रचनात्मकता का एक बड़ा स्रोत है, जो कई लोगों को नए उद्योग, नए विचार और नए आविष्कार करने के लिए सशक्त बनाएगा।"

वार्डविज़ार्ड ने $1.29 बिलियन ईवी साझेदारी के तहत फिलीपींस को भेजा कस्टमाइज़्ड इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर

परिवहन विशेष न्यूज

'जॉय ई-बाइक' और 'जॉय ई-रिक' ब्रांड के तहत भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी लिमिटेड ने फिलीपींस को कस्टमाइज़्ड इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर, ई-ट्राइक (ड्राइवर + 10) भेजा है। यह वाहन बेउला इंटरनेशनल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन से मिले US$1.29 बिलियन के ऑर्डर का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य फिलीपींस में सार्वजनिक परिवहन को बेहतर बनाना है।

ई-ट्राइक का परीक्षण वार्डविज़ार्ड की फिलीपीन सरकार के पब्लिक यूटिलिटी व्हीकल मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम के प्रति प्रतिबद्धता के एक हिस्से के रूप में किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य पुराने वाहनों को इलेक्ट्रिक विकल्पों से बदलना है।

ई-ट्राइक के अलावा, वार्डविज़ार्ड ने स्थानीय बाजार के लिए उनकी उपयुक्तता का आकलन करने के लिए फरवरी 2025 में अपने लाइनअप से अन्य इलेक्ट्रिक वाहनों को फिलीपींस भेजने की योजना बनाई है। यह कदम वार्डविज़ार्ड और बेउला इंटरनेशनल के बीच चल रही साझेदारी का समर्थन करता है, जिसका उद्देश्य फिलीपींस में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को आगे बढ़ाना है।

भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी लिमिटेड ने 'जॉय ई-बाइक' और 'जॉय ई-राइक' ब्रांड के तहत बढ़ते ईवी क्षेत्र में खुद को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है। कंपनी इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया और चार पहिया वाहनों की एक श्रृंखला के माध्यम से संधारणीय और अभिनव गतिशीलता समाधान प्रदान करने पर केंद्रित है। कार्बन उत्सर्जन को कम करने और स्वच्छ परिवहन विकल्पों को अपनाने पर भारत के बढ़ते जोर के साथ, वार्डविज़ार्ड देश के स्वच्छ, हरित भविष्य के दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाते हुए इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग को पूरा करने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहा है।

वार्डविज़ार्ड तेजी से बढ़ते बाजार में अवसरों और चुनौतियों दोनों का सामना करता है। भारतीय ईवी बाजार अभी भी एक नवजात अवस्था में है, जिसमें बुनियादी ढांचे की कमी, उच्च अग्रिम लागत और सीमित उपभोक्ता जागरूकता कुछ प्रमुख बाधाएं हैं। हालांकि, कंपनी व्यक्तिगत यात्रियों से लेकर व्यवसायों तक के विविध उपभोक्ता खंडों को किफायती और व्यावहारिक इलेक्ट्रिक मोबिलिटी समाधान प्रदान करके इन मुद्दों को संबोधित कर रही है।

प्रतिस्पर्धी भारतीय बाजार में खुद को बनाए रखने के लिए वार्डविज़ार्ड के दृष्टिकोण में कई रणनीतियाँ शामिल हैं। कंपनी ने अपने उत्पादों के प्रदर्शन, बैटरी दक्षता और सामर्थ्य को बेहतर बनाने के लिए अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। इसमें अपने ईवी की रेंज और चार्जिंग क्षमताओं को बढ़ाना शामिल है, जो उपभोक्ता निर्णयों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। इसके अतिरिक्त, वार्डविज़ार्ड ने प्रमुख क्षेत्रों में अपने बिक्री और सेवा नेटवर्क को मजबूत किया है, जिससे इसके उत्पाद संभावित खरीदारों के लिए अधिक सुलभ हो गए हैं।

वार्डविज़ार्ड की रणनीति का एक अन्य प्रमुख तत्व भागीदारी और सहयोग पर इसका ध्यान केंद्रित करना है। कंपनी ने फिलीपींस में बड़े पैमाने पर ईवी तैनाती के लिए बेउला इंटरनेशनल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के साथ भागीदारी की है, जो इसके वैश्विक विस्तार प्रयासों में योगदान देता है। अपने बाजारों में विविधता लाकर, वार्डविज़ार्ड घरेलू बाजार पर अपनी निर्भरता को कम करने का लक्ष्य बना रहा है, जबकि खुद को ईवी क्षेत्र में एक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर रहा है।

ब्रिक्सटन 18 नवंबर को दो मॉडल लॉन्च के साथ भारत में करेगी प्रवेश

परिवहन विशेष न्यूज

ऑस्ट्रियाई ब्रांड ब्रिक्सटन मोटरसाइकिल ने पहले ही इस साल चार मॉडल के साथ इंडियन मार्केट में प्रवेश करने की अपनी योजना का खुलासा किया है। इसके लिए इसने अपने अपकमिंग मॉडलों के लॉन्च की तारीख तय कर दी है। ऑस्ट्रियाई ब्रांड का इंडियन मार्केट में प्रवेश एक सप्ताह के भीतर होने वाला है। मॉडल 18 नवंबर को लॉन्च किए जाएंगे, लेकिन इसमें एक पेंच है। उक्त तिथि पर दो मॉडलों की कीमतों की घोषणा की जाएगी - एक इटालियन ईवी मेकर वीएलएफ का इलेक्ट्रिक स्कूटर है और दूसरा ब्रिक्सटन की मोटरसाइकिल है, जबकि ब्रिक्सटन भारत के लिए अपनी भविष्य की लाइनअप का प्रदर्शन कर सकती है।

ब्रिक्सटन ने अभी तक जल्द ही लॉन्च होने वाले इलेक्ट्रिक स्कूटर के नाम का खुलासा नहीं किया है, लेकिन हमें उम्मीद है कि कंपनी अपना वीएलएफ टेनिस स्कूटर लाएगी। टेनिस में इटैलियन इंजीनियरिंग, डिजाइन की चमक और कटिंग-एज टेक का मिक्स है। यह दो बैटरी वेरिएंट में आता है 1.4kWh और 2.8kWh। पावर आउटपुट 2bhp से 5bhp तक होता है, जो वेरिएंट पर निर्भर करता है। बेस मॉडल की रेंज 60km और टॉप स्पीड 45km/h है, जबकि टॉप-स्पेक वेरिएंट की रेंज 100km और टॉप स्पीड 100km/h है। सभी आंकड़े दावा किए गए हैं।

सस्पेंशन सेटअप में टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क और रियर मोनोशॉक शामिल हैं, और स्टॉपिंग पावर दोनों छोर पर डिस्क ब्रेक से आती है। स्कूटर में TFT डैश और तीन राइडिंग मोड (इको, कम्फर्ट और स्पोर्ट) हैं। अगर इसे यहां लॉन्च किया जाता है तो टेनिस ईवी स्पेस में ओला एस1 एयर, एथर 450एस, बजाज चेतक और टीवीएस आईक्यूब को टक्कर देगा।

ब्रिक्सटन अपनी चार मोटरसाइकिलों में से एक को भी लॉन्च करेगी - क्रॉसफायर 500 एक्स, क्रॉसफायर 500 एक्ससी, क्रॉमवेल 1200, और क्रॉमवेल 1200 एक्स अगले सप्ताह बाकी तीन भी समय के साथ लॉन्च होंगी। इनमें से कौन सी मोटरसाइकिल पहले लॉन्च होगी, इसका खुलासा होना अभी बाकी है। पहली दो मोटरसाइकिलें 500cc प्लेटफॉर्म पर आधारित हैं, जबकि बाद की दो बड़ी क्षमता वाली 1,200cc, ट्विन-सिलिंडर मोटरसाइकिलें हैं।

ब्रिक्सटन क्रॉसफ़ायर 500X एक कैफ़े रेसर है, जिसमें मज़बूत सेटअप और 47bhp ट्विन-सिलिंडर लिक्विड-कूल्ड इंजन है, जबकि क्रॉसफ़ायर 500XC एक स्क्रैम्बलर है, जिसमें 500X जैसा ही इंजन है। 1,200cc मोटरसाइकिलों की बात करें तो क्रॉमवेल 1200X और क्रॉमवेल 1200 का डिज़ाइन 500cc बाइक जैसा ही है, लेकिन इसमें 82bhp ट्विन-सिलिंडर इंजन है, जिसकी विस्थापन क्षमता 1,222cc है।

ब्रिक्सटन अपनी मोटरसाइकिलों को पूरी तरह से नॉक-डाउन यूनिट्स के रूप में हमारे मार्केट में लाएगी। मॉडल को कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में KAW वेलोस मोटर्स के कारखाने में इकट्ठा किया जाएगा, जो दर्शाता है कि बाइक अपने यूरोपीय समकक्षों की तुलना में अधिक महंगी होंगी। सेल मोटोहाउस डीलरशिप नेटवर्क के माध्यम से होगी।

क्या नीट युजी परीक्षा की तैयारी शुरू करने का कोई आदर्श समय है?

विजय गर्ग

हर साल, देश भर में लाखों उम्मीदवार शीर्ष प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेजों में से एक में अध्ययन करने के अपने सपने को साकार करने के लिए नीट युजी (राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा) परीक्षा में शामिल होते हैं। एनटीए (राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी) द्वारा आयोजित, एनईईटी वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है और इसे देश में सबसे चुनौतीपूर्ण और कठिन मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं में से एक माना जाता है।

हर साल, देश भर में लाखों उम्मीदवार शीर्ष प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेजों में से एक में अध्ययन करने के अपने सपने को साकार करने के लिए नीट युजी (राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा) परीक्षा में शामिल होते हैं। एनटीए (राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी) द्वारा आयोजित, एनईईटी वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है और इसे देश में सबसे चुनौतीपूर्ण और कठिन मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं में से एक माना जाता है। केवल कुछ आवेदक ही अच्छे ग्रेड के साथ परीक्षा उत्तीर्ण कर पाते हैं। एनईईटी की तैयारी करने वाले छात्रों को परीक्षा के लिए पहले से तैयारी करने का सुझाव दिया जाता है ताकि परीक्षा से पहले अंतिम समय की कमियों और शंकाओं को दूर करने के लिए उनके पास पर्याप्त समय हो। इससे हर छात्र के मन में एक सवाल उठता है: ₹नीट की तैयारी कब शुरू करें?₹ क्या नीट युजी की तैयारी शुरू करने का कोई आदर्श समय है? जब मेडिकल या जेईई जैसी किसी अन्य प्रवेश परीक्षा की तैयारी शुरू करने की बात आती है, तो छात्र अक्सर पूछते हैं, ₹मुझे एनईईटी की तैयारी कब शुरू करनी चाहिए?₹ यद्यपि यह किसी व्यक्ति की अवधारणाओं को समझने की क्षमता और क्षमताओं पर निर्भर करता है, लेकिन यह सुझाव दिया जाता है कि सभी एनईईटी अभ्यर्थी अपनी तैयारी यथाशीघ्र शुरू कर दें। जल्दी शुरुआत करने से आपको अपने कमजोर क्षेत्रों पर काम करने और स्पष्ट समझ के साथ अवधारणाओं पर मजबूत पकड़ बनाने के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। आपने सुना होगा, ₹जितनी जल्दी शुरू हुआ, उतनी जल्दी पूरा होगा।₹ नीट की तैयारी शुरू करने का सबसे अच्छा समय वह है जब आप मुख्य विषयों और अवधारणाओं के साथ पूरे पाठ्यक्रम को कवर कर सकते हैं। लेकिन जब भी आप शुरुआत करें, तो अपनी पढ़ाई पर लगातार और केंद्रित रहना बेहद महत्वपूर्ण है। नीट युजी एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी परीक्षा है और उम्मीदवारों को इसकी तैयारी जल्द से जल्द शुरू कर देनी चाहिए। प्रारंभिक नीट युजी तैयारी के लाभ आपकी नीट की तैयारी जल्दी शुरू करने के कई फायदे हैं। उनमें से कुछ यहाँ इस प्रकार हैं: 1. पुनरीक्षण के लिए पर्याप्त जगह किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में चीजों को दोहराने के महत्व पर ध्यान दें। अपनी अवधारणाओं को बढ़ावा

देने और पढ़ाई को लंबे समय तक याद रखने के लिए रिवीजन महत्वपूर्ण है। नीट युजी परीक्षा के लिए जल्दी तैयारी करने से आपको रिवीजन के लिए पर्याप्त समय मिलता है। आप अपने पाठ्यक्रम और महत्वपूर्ण विषयों को कई बार दोहरा सकते हैं और परीक्षा तक मानसिक शांति सुनिश्चित कर सकते हैं। 2. अवधारणाओं का संपूर्ण ज्ञान छात्र अक्सर पूछते हैं, ₹नीट के लिए पढ़ाई कैसे शुरू करें?₹ सबसे अच्छा विचार अवधारणाओं पर मजबूत पकड़ रखना है ताकि आप परीक्षा में किसी भी प्रश्न को कठिनाई स्तर की परवाह किए बिना हल कर सकें। और जल्दी तैयारी शुरू करने से आपको किसी विशेष विषय और अध्याय की अवधारणाओं को अच्छी तरह से सीखने और समझने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। आप परीक्षाओं की झंझट से बच सकते हैं। 3. पाठ्यक्रम को कवर करने के लिए अधिक समय नीट पाठ्यक्रम को कवर करना नीट की तैयारी के लिए पहली और सबसे महत्वपूर्ण सलाह है। लेकिन नीट युजी पाठ्यक्रम बहुत बड़ा है और इसमें भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के प्रश्न शामिल हैं। एनईईटी परीक्षा के लिए जल्दी शुरुआत करने से आपको परीक्षा से पहले पूरा पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए पर्याप्त समय का अतिरिक्त लाभ मिलेगा, जिससे संशोधन के लिए पर्याप्त गुंजाइश बचेगी। 4. मॉक टेस्ट के माध्यम से कौशल में सुधार मॉक टेस्ट हल करना अपनी तैयारी के स्तर को परखने और अपने कमजोर क्षेत्रों पर काम करने का एक शानदार तरीका है। साथ ही, यह आपको परीक्षा में प्रश्नों को हल करने की गति और सटीकता में सुधार करने में मदद करता है। एनईईटी परीक्षा के लिए जल्दी तैयारी शुरू करने से आप नियमित मॉक टेस्ट देकर अपनी तैयारी के स्तर को माप सकेंगे। 5. तनाव दूर करें जब आपके पास परीक्षा की तैयारी के लिए केवल कुछ महीने बचे होते हैं, तो आप महत्वपूर्ण विषयों और संशोधनों पर अतिरिक्त ध्यान दिए बिना पाठ्यक्रम पूरा करने की होड़ में लग जाते हैं। यह, इसके विपरीत, आपका नुकसान करता हैतैयारी. जल्दी शुरुआत करने से आपको अपनी पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय मिलेगा, जिससे तैयारी के दौरान तनाव और भागदौड़ दूर होगी। अब आपको नीट की तैयारी कब शुरू करनी है इसका जवाब पता चल गया होगा। नीट युजी परीक्षा जल्दी शुरू करने के कई फायदे हैं। इसके अलावा, हम आपको परीक्षा में सफल होने में मदद करने के लिए कुछ युक्तियां साझा करते हैं। नीट युजी परीक्षा की तैयारी के टिप्स और ट्रिक्स नीट परीक्षा को क्रैक करने के लिए एक अच्छी रणनीतिक अध्ययन योजना और प्रभावी समय प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इसलिए, कुछ महीने पहले परीक्षा की तैयारी करने के बजाय अभी से शुरुआत करें। आपकी नीट की तैयारी में मदद के लिए यहां कुछ तरकीबें दी गई हैं। नज़र रखना: 1. एनईईटी पाठ्यक्रम से परिचित हों अपनी तैयारी शुरू करने से पहले आपको सबसे पहले नीट परीक्षा पाठ्यक्रम से परिचित होना चाहिए। इससे आपको परीक्षा की समग्र संरचना के साथ-साथ शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में भी जानकारी मिल जाएगी। पूरे पाठ्यक्रम को ठीक से पढ़ें और सभी महत्वपूर्ण विषयों और पर्याप्त समय आवंटन को शामिल करते हुए NEET के लिए सर्वोत्तम समय सारिणी बनाएं। इसका समर्पित भाव से पालन करें. 2. एनसीईआरटी की किताबें पढ़ने के लिए अच्छी हैं परीक्षा के कठिनाई स्तर और एनईईटी पाठ्यक्रम की विशालता को ध्यान में रखते हुए आपको यह लग सकता है कि इनका कोई उपयोग नहीं है, लेकिन यह छात्रों की सबसे बड़ी गलती है। जेईई या एनईईटी जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए एनसीईआरटी की किताबें महत्वपूर्ण हैं ताकि आपको अवधारणाओं पर मजबूत पकड़ बनाने में मदद मिल सके। एनईईटी और कक्षा 11वीं और 12वीं के पाठ्यक्रम में कई सामान्य विषय शामिल हैं, इसलिए उनका संदर्भ लेने से आपको काफी लाभ होगा। 3. पिछले वर्ष के पेपर और मॉक टेस्ट का अभ्यास करें पिछले वर्ष के प्रश्न पत्रों और मॉक टेस्ट का अभ्यास करने से आपको अपनी नीट की तैयारी के लिए एक निश्चित दिशा मिलेगी। आप कठिनाई स्तर और प्रश्नों के प्रकार आदि से अवगत हो सकते हैं। साथ ही, मॉक टेस्ट को हल करने से आपको एक निर्दिष्ट समय अवधि के भीतर प्रश्नों का उत्तर देने में अपनी गति और सटीकता को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। 4. समय पर संशोधन यदि हम नियमित रूप से चीजों को दोहराना छोड़ देते हैं तो हमने जो पढ़ा है उसे भूलने की अधिक संभावना है। और हम नीट परीक्षा में शामिल होने के दौरान पहले से ही सीखी गई चीजों को फीका नहीं कर सकते। इसलिए, विलंब से बचें और पढ़ाई को पटरी पर रखने के लिए बार-बार रिवीजन करें। निष्कर्ष आप अपनी समग्र एनईईटी तैयारी को बेहतर बनाने के लिए इन कुछ एनईईटी तैयारी युक्तियों का पालन कर सकते हैं। हालाँकि, जहाँ तक आपकी चिंता है कि नीट की तैयारी कब शुरू करें, तो जितनी जल्दी हो सके शुरुआत करने की सलाह दी जाती है ताकि आपके पास अवधारणाओं को समझने और मुख्य बिंदुओं को कवर करने के लिए पर्याप्त समय हो।

संपादकीय

चित्रों के जरिये कम शब्दों में रखें अपनी बात

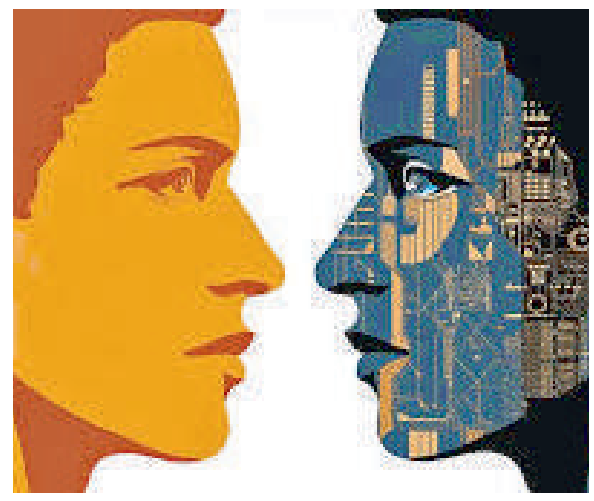

अगर आप कॉरपोरेट में नौकरी कर रहे हैं, तो आपके पास अच्छी योग्यता और बेहतर संवाद कौशल से ज्यादा अपनी बात को दिलचस्प अंदाज में कहने का हुनर होना चाहिए। दुनिया में आज कई सारे वक्ता हैं, जो अपनी बोलने की कला से ऑफिस प्रेजेंटेशन को प्रभावशाली बना देते हैं। अगर आप उन अच्छे वक्ताओं में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं, तो आपको अपने तरीकों में कुछ बदलाव लाने की आवश्यकता है। प्रेजेंटेशन किसी भी ऑफिस में काफी आम बात है और अगर आप भी अपने ऑफिस के प्रेजेंटेशन का नेतृत्व करने जा रहे हैं, तो कुछ बातों को ध्यान में रखकर आप अपने प्रेजेंटेशन को आकर्षक और रुचिकर बना सकते हैं।

● कम शब्दों के साथ कम स्लाइड आप अच्छे वक्ता तब नहीं बनते, जब आप अपने समग्र ज्ञान को प्रेजेंटेशन में बैठे लोगों के समक्ष उड़ेल देते हैं, बल्कि आप अच्छे वक्ता से संपादक तब बनते हैं, जब आप कम शब्दों में और कम स्लाइड का उपयोग करते हुए

● प्रेजेंटेशन को बेहतर बनाते हैं। दरअसल बहुत अधिक स्लाइड और ज्यादा लंबे भाषण प्रेजेंटेशन को उबाऊ बना सकते हैं। इसलिए प्रेजेंटेशन में सीमित शब्दों के साथ कम स्लाइड का प्रयोग करें।

● बुलेट पॉइंट का उपयोग न करें स्मृति और संचार पर किए गए एक शोध से पता चलता है कि चित्रों द्वारा दी गई जानकारी को शब्दों की तुलना में याद रखना सबसे सरल होता है, जिसे वैज्ञानिक 'पिक्टोरियल सुपीरियॉरिटी' कहते हैं। मॉलिक्यूलर बायोलॉजिस्ट जॉन मदीना के अनुसार, चित्रों के माध्यम से याद रखने की हमारी क्षमता अधिक है। वह कहते हैं, किसी भी जानकारी को ध्यान से सुनें, वह आपको तीन दिन बाद केवल दस प्रतिशत ही याद रहेगी, लेकिन तस्वीरें आपको तीन दिन बाद भी 65 प्रतिशत तक याद रहेंगी। इसलिए किसी भी प्रेजेंटेशन को फोटो और वीडियो के साथ अधिक आकर्षक और दिलचस्प बनाया जा सकता है।

● प्रेजेंटेशन से पहले करें अभ्यास अधिकांश पेशेवर प्रेजेंटेशन से पहले उतना अभ्यास नहीं करते, जितना उन्हें करना चाहिए। वह प्रेजेंटेशन में उपयोग की जाने वाली स्लाइड्स की केवल समीक्षा भर करते हैं और घंटों पहले सुनियोजित तरीके से इसकी तैयारी नहीं करते हैं। इसलिए किसी भी प्रेजेंटेशन में शामिल होने से पहले अभ्यास जरूर करें और इसके लिए कुछ डायलॉग पहले से ही तैयार कर लें।

विज्ञान की प्रगति में चूहों का अहम योगदान है

विजय गर्ग

वैज्ञानिक एक सदी से भी अधिक समय से चिकित्सा अनुसंधान में चूहों का उपयोग कर रहे हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ाने में उनका योगदान अतुलनीय है। इंसुलिन की खोज से लेकर विभिन्न बीमारियों के लिए टीकों और उपचारों के विकास तक, चूहों ने वैज्ञानिकों को मानव शरीर को समझने और नए उपचार विकसित करने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चिकित्सा अनुसंधान में चूहों का उपयोग क्यों किया जाता है इसका एक मुख्य कारण यह है कि वे मनुष्यों के साथ कई जैविक और शारीरिक समानताएं साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, चूहों का हृदय, श्वसन और तंत्रिका तंत्र मनुष्यों के समान होता है, जो उन्हें मानव रोगों और उपचारों के अध्ययन के लिए एक आदर्श मॉडल बनाता है। चिकित्सा अनुसंधान में चूहों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान इंसुलिन की खोज थी, जिसका उपयोग डॉक्टर मधुमेह के इलाज के लिए करते हैं। 1922 में, टोरंटो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने यह प्रदर्शित करने के लिए चूहों का उपयोग किया कि डॉक्टर मानव रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने के लिए कुत्तों के अग्न्याशय से निकाले गए इंसुलिन का उपयोग कर सकते हैं। इस खोज ने मधुमेह के उपचार में क्रांति ला दी और अनगिनत लोगों की जान बचाना जारी रखा। चूहों ने कई संक्रामक रोगों के लिए टीकों और उपचारों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, पोलियो वैक्सीन विकसित करने के लिए चूहों का उपयोग किया गया था, जिसने दुनिया भर में लाखों लोगों की जान बचाई है। चूहों का उपयोग इबोला वायरस, एचआईवी और अन्य घातक संक्रामक रोगों का अध्ययन करने के लिए भी किया गया है, जिससे शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद मिली कि ये वायरस कैसे काम करते हैं और नए उपचार विकसित करते हैं। संक्रामक रोगों के अलावा, चूहों का उपयोग कैंसर, हृदय रोग और अल्जाइमर और पार्किंसंस रोग जैसे तंत्रिका संबंधी विकारों का अध्ययन करने के लिए किया गया है। शोधकर्ताओं ने इन बीमारियों के लिए नए उपचार विकसित करने और उनके विकास में योगदान देने वाले अंतर्निहित तंत्र का अध्ययन करने के लिए चूहों का उपयोग किया है। जबकि कुछ लोग चिकित्सा अनुसंधान में जानवरों के उपयोग पर सवाल उठा सकते हैं, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जानवरों के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए अध्ययन में चूहों का उपयोग नैतिक समितियों द्वारा अत्यधिक विनियमित और देखरेख किया जाता है। इसके अलावा, चूहों के उपयोग से अनगिनत चिकित्सीय सफलताएँ प्राप्त हुई हैं जिन्होंने दुनिया भर में लाखों लोगों के जीवन को बचाया और बेहतर बनाया है। विश्व चूहा दिवस हमारी दुनिया में चूहों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानने और उसका जश्न मनाने का एक अवसर है। वे चिकित्सा और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण अनुसंधान विषयों के रूप में कार्य करते हैं और शिकार और बीज फैलाने वाले के रूप में महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाते हैं। चूहों की कुछ प्रजातियों को कीस्टोन प्रजाति भी माना जाता है, जिसका अर्थ है कि उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। विश्व चूहा दिवस का एक मुख्य लक्ष्य जिम्मेदार चूहे के स्वामित्व को बढ़ावा देना और इन शानदार जानवरों के बारे में मिथकों और रूढ़ियों को दूर करना है। उदाहरण के लिए, पालतू चूहे साथी जानवरों के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं, जो अपने स्नेही और चंचल व्यक्तित्व के लिए जाने जाते हैं। हालाँकि, बहुत से लोग चूहों की स्वच्छता या स्वभाव के बारे में गलत धारणाओं के कारण उन्हें

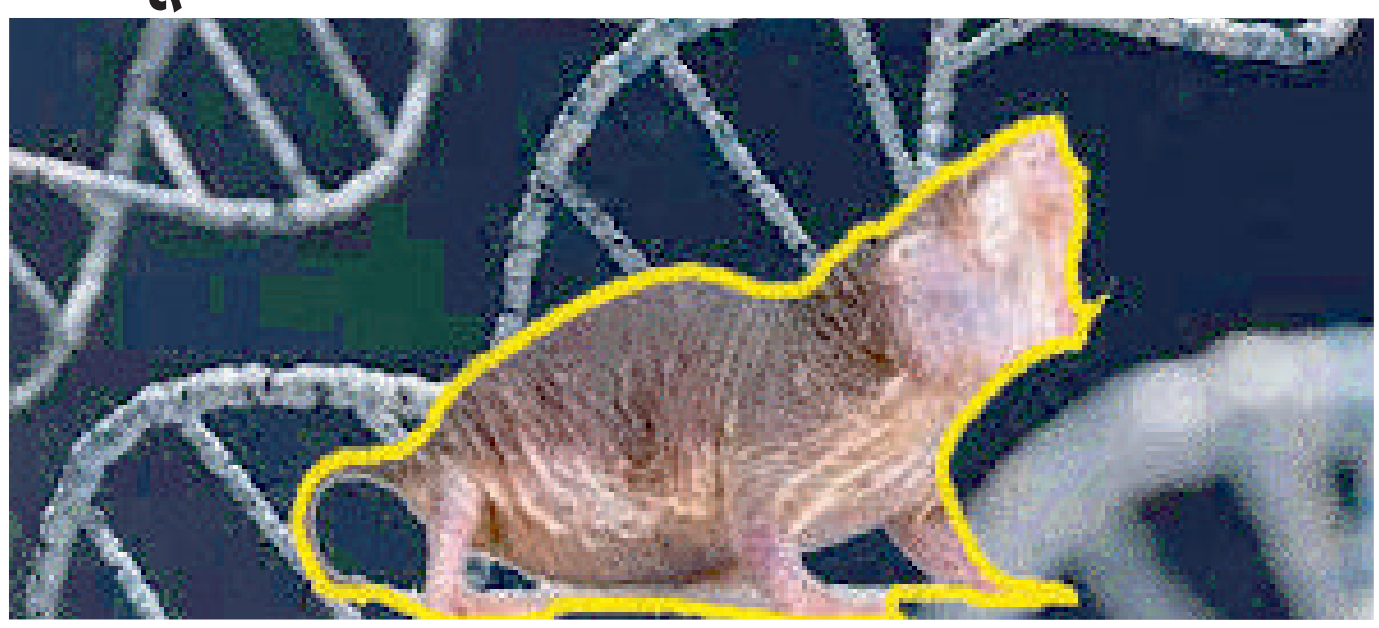

अपनाने से झिझकते हैं। विश्व चूहा दिवस पर, दुनिया भर के चूहे प्रेमी अपने प्यारे पालतू जानवरों की तस्वीरें और कहानियाँ और चूहों की देखभाल और कल्याण के बारे में शैक्षिक संसाधन साझा करते हैं। कई संगठन इस दिन का उपयोग मानवीय कीट नियंत्रण विधियों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी करते हैं जो चूहों को नुकसान नहीं पहुंचाते या मारते नहीं हैं। विश्व चूहा दिवस सभी जानवरों का सम्मान करने और उनकी सराहना करने के महत्व की याद दिलाता है, भले ही उनका आकार कुछ भी हो या मनुष्यों के लिए उनकी उपयोगिता कुछ भी हो। जैसा कि हम जलवायु परिवर्तन और नुकसान जैसी चुनौतियों का सामना करना जारी रख रहे हैंजैव विविधता के लिए, हमें सभी प्रजातियों के मूल्य को पहचानना चाहिए और एक अधिक दयालु और टिकाऊ दुनिया बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। निष्कर्षतः, चिकित्सा अनुसंधान में चूहों के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। इंसुलिन की खोज से लेकर विभिन्न बीमारियों के लिए जीवन रक्षक टीके और उपचार विकसित करने तक, चूहों ने चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सुनने का धीरज

विजय गर्ग

आज के समय में हम सभी एक कटु सत्य से दो चार हो रहे हैं। वह यह है कि सब अपनी-अपनी कहना चाहते हैं, मगर कोई किसी को धीरज से सुनना नहीं चाहता है । जब भी कभी दो लोगों को बात करते हुए देखें तो यही लगता है कि अपनी बात को कह देने की इतनी जल्दी है उनमें कि वे सामने वाले को सुनने की इच्छा नहीं रखते हैं।

कई बार तो ऐसा साफ दिखाई दे जाता है कि कहने वाला बेचारा बोलतो रहा होता है, पर उसके सामने श्रोता बने हुए बहुत कम लोग होते हैं, जो सचमुच उसको सुन रहे होते हैं। कई लोग सामने बैठ तो जाते हैं, मगर पल में ही कहीं खो जाते हैं। वे न तो बोलने वाले से आंखें मिला पाते हैं, न उसके संवेदनशील रवैये पर गौर फरमाते हैं और न ही उसके कहे का कोई निचोड़ निकालते हैं । वे बस शरीर रूप में उसके सामने रहते हैं । पर कुछ भी सुनते नहीं हैं। अगर किसी वजह से ध्यान चला गया, तो बोलने वाले को इससे गहरी ठेस पहुंचती है। वह अपने शब्द समायोजित करके कुछ महत्त्वपूर्ण बात साझा करना चाहता होगा, मगर जो लोग सिर्फ दिखावे के लिए सिर हिला रहे थे, वे दरअसल कुछ सुन नहीं रहे थे। किसी मसले पर अपनी कहने वाला व्यक्ति शायद किसी आशा और भरोसे से आया होगा। मगर सुनाने वाला व्यक्ति अंत में समझ जाता है कि वह ठगा गया। हां-हां, हूं- हूं आदि का सुंदर हुंकारा भरते हुए सामने वाला अपनी आगे की योजना बना रहा था या अपने ही निजी जीवन के किसी खयाल में गुम था । उसने वह सब सुना ही नहीं, जिसके लिए उससे उम्मीद की जा रही थी। कहने वाले का समय अनमोल था। उसकी ऊर्जा अनमोल थी। सब व्यर्थ चला गया।

ऐसी घटना से अगर आप और हम दो-चार हो रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है। गौर से सुनने का धीरज अब बहुत लोग सचमुच खोते जा रहे हैं। मनोवैज्ञानिक भी यह प्रमाणित कर रहे हैं कि सुनने की एकाग्रता अब महज नब्बे सेकंड की रह गई है। एक प्रसंग है, जिसमें एक विश्वविद्यालय के थियेटर में एक महत्त्वपूर्ण विषय पर सेमिनार हो रहा था । आमंत्रित छात्रों के सामने चालीस मिनट का पहला व्याख्यान हुआ। फिर दो सवाल किए गए। पहला यह कि इस व्याख्यान में बताए गए चार बिंदु कौन-कौन से हैं। दूसरा प्रश्न यह था कि इस व्याख्यान को गौर से सुनने के बाद आपको क्या - क्या याद आया । इन दोनों ही सवालों के जवाब में 'सुईपटक सन्नाटा' छा गया था। सेमिनार के विषय का सहारा लेकर कुछ ने संदर्भहीन बिंदु बताए, मगर वे गलत थे। उस व्याख्यान को दोबारा चलाया गया, जो सेमिनार के विषय से एकदम अलग था। अब वहां पर उपस्थित विद्यार्थियों को शर्मिंदगी महसूस हुई। यह कमोबेश हर सेमिनार या सभा का बुरा हाल रहता होगा, इसीलिए परिणाम निल बटे सन्नाटा रहता है । आजकल बहुत सारे लोग किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहते हुए भी मिल जाते हैं। उनका दावा होता है कि वे हमेशा खुद को ताजा जानकारियों से अद्यतन रखते हैं... सारी दुनिया को अपने मोबाइल में लिए घूमते हैं और हर बात उनको पता है। वे कहते हैं कि हम तकनी से जुड़े हर मंच को समझते हैं। अगर एक पल के लिए इस पर भरोसा कर भी लिया जाए तो इसका सच थोड़ा अलग होता है। आभासी मंचों पर जो सुन रहा होता है, वह कौन है और क्या प्रतिक्रिया दे रहा है, उसकी पहचान ठीक-ठीक मालूम नहीं होती। वह आभासी दुनिया है । उस आभासी जगत में एक 'इमोजी' भी जवाब मान लिया जाता है। लेकिन हमारा चलता-फिरता समाज, हमारा घर, परिवार, संबंधी, मित्र, कालोनी के लोग, दफ्तर के सहकर्मी, क्लब के सदस्य आदि हमसे सीधे ही संपर्क में रहते हैं। याद किया जा सकता है कि

हमने कब और किस दिन उनकी कही बात को गौर से सुना और गुना था । ईमानदार होकर खुद को जवाब दिया जाना चाहिए ।

हमारे अपनों से किया गया वार्तालाप ही हमको वह बनाता है, जिसकी हम बात करते हैं। मिसाल के तौर पर अगर अभिभावक अपने बच्चों की अभिव्यक्ति को नजरअंदाज कर देते हैं तो आगे जाकर बच्चे भी उनसे कोई आशा नहीं रखते। वे अपने भविष्य की कोई योजना उनसे साझा करना पसंद नहीं करते। एक फिल्म आई थी- 'दिल धड़कने दो' । उस फिल्म की बुनियाद यही है कि एक परिवार इसलिए अलग-थलग सा हो गया कि उस घर में आपस में कोई ठीक से न सुनता है, न अपनी राय देता है। सुनने - सुनाने के मामले में इसीलिए गलतफहमी पनपने लगती है। दरअसल, संबंध गहरे तभी होते हैं, रिश्तों में गरमाहट तभी रहती है, जब हम किसी कहने वाले की बात सुनकर उसे निराशा से बाहर लाएं। जरूरी नहीं कि हर बार कोई अपनी परेशानी ही बता रहा हो । कुछ लोग अच्छी बातें और अपने जोश के चर्चे भी करते हैं। एक बार एक मजदूर ने अपने मित्र से कुछ खास बात कही। मगर सुनने वाले की अपनी ही व्यस्तता थी, अलग प्राथमिकता थी। वह उसकी बात को आधे-अधूरे कान से सुनकर चला गया और जब कहने वाले ने कुछ ही देर बाद पूछा कि, 'अभी तो मैंने कहा था... तुमने सुना नहीं।' सुनने वाले ने कहा, 'हां, कारखाना बंदर खा गया' । यही कहा था। 'नहीं, मैंने कहा था कि कारखाना बंद रखा गया है और आज अवकाश है। पर तुम काम पर चले गए ।' कहने वाले को कितना बुरा लगा कि उसकी बात हल्के कान से सुनी गई। सच यह है कि किसी को गौर से सुनने के लिए वक्ता के शब्द के साथ-साथ रहना होता है। उसके तेवर को पकड़ कर उसके मन को छूना होता है। तभी हम पूरे संदर्भ से किसी बात को समझ पाते हैं। किसी ने जो कहा उसे हमने वैसे का वैसा ही सुना । इसका दावा तभी कर पाते हैं, जब हमने एकाग्र होकर कुछ सुना होगा। सुनने की ललक और विकसित करना अपने व्यक्तित्व को बचाने की कोशिश है ।

शेयर बाजार में कोहराम, निवेशकों को भारी नुकसान; मार्केट में गिरावट के ये हैं कारण

परिवहन विशेष न्यूज

शेयर बाजार में बिकवाली भरा कारोबार आज भी जारी है। करीब एक महीने से जारी बिकवाली के कारोबार ने निवेशकों को डरा दिया है। अब लार्जकैप के शेयरों में भी बिकवाली शुरू हो गई है। ऐसे में निवेशक बाजार में तेजी की उम्मीद लगा रहे हैं। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि स्टॉक मार्केट में गिरावट के कारण क्या है?

नई दिल्ली। पिछले कई हफ्तों से शेयर बाजार में गिरावट भरे कारोबार ने निवेशकों को डरा दिया है। आज भी दोनों सूचकांक में गिरावट देखी जा रही है। जहां बाजार में शुरुआती गिरावट केवल मिडकैप और स्मॉलकैप में देखने को मिल रही थी। वहीं अब लार्ज कैप शेयरों में भी बिकवाली जारी हो गई। इस बिकवाली से नए और पुराने निवेशक डर गए हैं।

सितंबर के अंत में जहां निफ्टी (Nifty50) और सेंसेक्स (Sensex) अपने ऑल-टाइम हाई पर थे। वहीं, आज यह दोनों सूचकांक अपने निचले स्तर पर पहुंच गए। आज के कारोबारी सत्र में सेंसेक्स 77,700 अंक और निफ्टी 23,500 अंक पर आ गया है। पिछले एक महीने में निफ्टी 5 फीसदी और सेंसेक्स 4 फीसदी से अधिक टूट गया।

निवेशकों को भारी नुकसान

शेयर बाजार में भारी गिरावट के कारण निवेशकों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा है। 27 सितंबर 2024 तक बीएसई का मार्केट-कैप 477 लाख रुपये था। वहीं, 13 अक्टूबर 2024 को यह 429 लाख करोड़ रुपये हो गया है। इस पूरे टेन्योर में स्टॉक मार्केट इन्वेस्टर को 48 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है।

ऐसे में निवेशकों के बाजार के चढ़ने की आस बनी हुई है। आइए, जानते हैं कि शेयर बाजार में गिरावट के कारण क्या है।

क्यों गिर रहा है बाजार

अक्टूबर और नवंबर में बड़ी-बड़ी कंपनियों ने तिमाही नतीजे जारी किए। इस बार कंपनियों के निराशाजनक तिमाही नतीजे जारी होने के बाद निवेशकों ने शेयरों की बिकवाली करने का निर्णय लिया।

स्टॉक मार्केट में गिरावट की दूसरी वजह डॉलर इंडेक्स का मजबूत होना भी है। वर्तमान में डॉलर चार महीने के उच्चतम स्तर पर और भारतीय करेंसी ऑल-टाइम लो पर पहुंच गई है। ऐसे में निवेशक डॉलर की मजबूती के कारण चिंतित है। मार्केट एक्सपर्ट के अनुसार डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति पद संभालने के बाद अमेरिकी आर्थिक विकास और आक्रामक व्यापार नीतियों में सुधार आएगा, जिससे महंगाई बढ़ने का खतरा है।

12 नवंबर को अक्टूबर महीने का खुदरा महंगाई का आंकड़ा आया था। अक्टूबर में खुदरा महंगाई दर 14 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। रिटेल इन्फलेशन 6.21 फीसदी रहा, जो आरबीआई के दायरे से अधिक है।

विदेशी निवेशकों द्वारा जारी बिकवाली बाजार में आई गिरावट का मुख्य कारण है। बीते एक महीने में विदेशी निवेशकों ने 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा के शेयर बेचे। अगर पिछले एक हफ्ते की बात करें तो एफआईआई ने 20 हजार करोड़ रुपये की निकासी की। विदेशी निवेशक भारतीय बाजार के मुख्य चालकों में से एक है। अमेरिकी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद विदेशी निवेशक भारतीय बाजार की जगह ग्लोबल मार्केट की तरफ आकर्षित हो रहे हैं।

ग्लोबल मार्केट से मिल रहे कमजोर संकेत के कारण भी भारतीय शेयर बाजार में बिकवाली भरा कारोबार है। मंगलवार को अमेरिकी बाजार के साथ एशियाई बाजार भी गिरावट के साथ बंद हुए। माना जाता है कि गिफ्ट निफ्टी (Gift Nifty) भारतीय शेयर की चाल का संकेत देती है। ऐसे में आज गिफ्ट निफ्टी भी 1 फीसदी से ज्यादा गिरकर कारोबार कर रहा है।

बाजार में कब आएगी तेजी

शेयर बाजार में कब तेजी आएगी इसको लेकर मार्केट एक्सपर्ट का कहना है कि बाजार में एक हद तक का करेक्शन हो सकती है। ऐसे में बाजार में जल्द तेजी आने की उम्मीद है। हालांकि, अभी निफ्टी और सेंसेक्स अपने लो लेवल पर ट्रेड कर रहे हैं।

शादी सीजन में सस्ता हुआ सोना, चांदी के बढ़े दाम; चेक करें लेटेस्ट प्राइस

पिछले कई दिनों से सोने और चांदी कीमतों में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। बुधवार यानी 13 नवंबर 2024 को भी यह सिलसिला जारी रहा। सोने की कीमतों में गिरावट देखने को मिली वहीं चांदी के भाव उछाल आया। एक्सपर्ट का कहना है कि अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद निवेशक नफा-नुकसान का आकलन कर रहे हैं। ऐसे में कीमतों में उतार-चढ़ाव जारी रह सकता है।

नई दिल्ली। सोने और चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव का सिलसिला जारी है। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत 50 रुपये गिरकर चार सप्ताह के निचले स्तर 77,750 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गई। हालांकि, चांदी की कीमतों में दो दिनों की गिरावट के बाद तेजी दिखी। यह 1,200 रुपये बढ़कर 92,500 रुपये प्रति किलो हो गई, जबकि पिछले कारोबारी सत्र में यह 91,300 रुपये प्रति किलो पर बंद हुई थी।

सोने की कीमतों पर एक्सपर्ट की राय

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर वायदा कारोबार में दिसंबर डिलीवरी के लिए सोने के अनुबंध 204 रुपये या 0.27 प्रतिशत बढ़कर 75,105 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहे हैं। एलकेपी सिक्योरिटीज में कमोडिटी और करेंसी के उपाध्यक्ष अनुसंधान विश्लेषक जतिन त्रिवेदी ने कहा, ₹अमेरिकी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के आंकड़े जल्द जारी होने वाले हैं। ऐसे में निवेशक सोने का रुख कर रहे हैं।₹

त्रिवेदी ने कहा कि फेडरल रिजर्व के 2 प्रतिशत लक्ष्य की ओर सीपीआई की गिरावट ब्याज दरों में निरंतर कटौती का मार्ग प्रशस्त कर सकती है, जो संभवतः लंबी अवधि में सोने का समर्थन कर सकती है।

डॉलर में तेजी का नेगेटिव इफेक्ट

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (कमोडिटीज) सौमिल गांधी ने कहा, "बुधवार को सोने में थोड़ी गिरावट आई और यह निचले स्तर पर स्थिर हो गया। अमेरिकी चुनाव के बाद, डॉलर और ट्रेजरी यील्ड में लगातार बढ़ोतरी हुई, जिसका कीमती धातुओं की कीमत पर नकारात्मक असर पड़ा।"

कोटक सिक्योरिटीज के कमोडिटी रिसर्च की एवीपी कायनात चैनवाला के अनुसार, निवेशक ट्रम्प की जीत के मायने का आकलन करना जारी रखे हुए हैं, क्योंकि उनके मंत्रिमंडल में कई प्रमुख नियुक्तियों ने चीन के प्रति सख्त रुख अपनाया है।

ग्लोबल गोल्ड ईटीएफ से बड़ी निकासी

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, छह महीने के लगातार निवेश के बाद नवंबर के पहले सप्ताह में वैश्विक गोल्ड ईटीएफ से करीब 809 मिलियन अमेरिकी डॉलर की निकासी हुई। रिपोर्ट में कहा गया है कि उत्तरी अमेरिकी फंडों ने निवेश में बढ़त दर्ज की, लेकिन एशिया से मजबूत मांग ने कुछ हद तक संतुलन प्रदान किया, जिससे संभावित अमेरिकी-चीन व्यापार तनाव पर चिंता का संकेत मिला।

एशियाई बाजार में चांदी 0.85 प्रतिशत बढ़कर 31.02 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी। ब्लिंकएक्स और जेएम फाइनेंशियल के शोध (कमोडिटी एवं करेंसी) के उपाध्यक्ष प्रणव मेर ने कहा, "अमेरिकी डॉलर में मजबूती और ट्रेजरी यील्ड में वृद्धि के कारण सोने की कीमतें दो महीने के निचले स्तर के करीब स्थिर कारोबार कर रही हैं।"

खाद्य तेल का आयात 3 फीसदी घटा, क्या यही है महंगाई बढ़ने की वजह?

परिवहन विशेष न्यूज

साल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने एक बयान में कहा कि मूल्य के लिहाज से आयात पिछले वर्ष के 138424 करोड़ रुपये से मामूली रूप से घटकर 2023-24 में 131967 करोड़ रुपये रह गया। कच्चे पाम तेल का आयात 2023-24 में घटकर 69.70 लाख टन रह गया जो पिछले वर्ष 75.88 लाख टन था जबकि आरबीडी पामोलिन का आयात 21.07 लाख टन से घटकर 19.31 लाख टन रह गया।

नई दिल्ली। पिछले कुछ समय से महंगाई लगातार बढ़ रही है। अक्टूबर में तो यह 14 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। महंगाई बढ़ाने में सबसे बड़ा हाथ खाद्य मुद्रास्फीति का रहा, खासकर सब्जियों और खाद्य तेलों के दाम का। 2023-24 के ऑयल मार्केटिंग ईयर (नवंबर-अक्टूबर) के दौरान खाद्य तेलों के आयात में 3.09 फीसदी की कमी आई है और यह 159.6 लाख टन रह गया। पिछले तेल वर्ष में 164.7 लाख टन का आयात किया गया था। भारत खाद्य तेलों का सबसे बड़ा आयातक है।

क्यों घटा खाद्य तेलों का आयात

भारत में तिलहन का उत्पादन बढ़ा है। साथ ही, डिमांड में भी कमी आई है। इसके चलते ओवरऑल इम्पोर्ट घटा है। सरकार ने घरेलू किसानों को फायदा पहुंचाने के लिए खाद्य तेलों पर आयात शुल्क भी बढ़ाया है। इसका भी कुछ असर आयात पर दिखा है। दरअसल, केंद्र सरकार ने सितंबर में कच्चे और रिफाइंड खाद्य तेल पर लगने वाले आयात शुल्क 20 प्रतिशत बढ़ा दिया था।

पाम ऑयल, सोया ऑयल और सूरजमुखी तेल पर सीमा शुल्क बढ़ाने का फैसला त्योहारी सीजन से ठीक पहले लिया था। इसका कुछ असर अक्टूबर में महंगाई के आंकड़े पर भी दिखा। उस वक्त अखिल भारतीय खाद्य तेल व्यापारी महासंघ ने कहा था कि इस फैसले से किसानों को राहत मिलेगी और उनकी कमाई भी बढ़ेगी। लेकिन, आम जनता पर महंगाई की मार भी पड़ेगी। उससे पहले भी सरकार ने किसानों को राहत देने के लिए सोयाबीन को समर्थन मूल्य पर खरीदने का निर्देश दिया था।

कितना रहा खाद्य तेलों का आयात

साल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने एक बयान में कहा कि मूल्य के लिहाज से, आयात पिछले वर्ष के 1,38,424 करोड़ रुपये से मामूली रूप से घटकर 2023-24 में 1,31,967 करोड़ रुपये रह गया। आंकड़ों के अनुसार, कच्चे पाम तेल का आयात 2023-24 में घटकर 69.70 लाख टन रह गया, जो पिछले वर्ष 75.88 लाख टन था, जबकि आरबीडी पामोलिन का आयात 21.07 लाख टन से घटकर 19.31 लाख टन रह गया।

सोयाबीन तेल का आयात 35.06 लाख टन से घटकर 34.41 लाख टन रह गया, जबकि सूरजमुखी तेल का आयात 30.01 लाख टन से बढ़कर 35.06 लाख टन हो गया। उद्योग संगठन ने कहा कि पिछले पांच सालों के दौरान रिफाइंड तेल की हिस्सेदारी तीन प्रतिशत से बढ़कर 12 प्रतिशत हो गई जबकि कच्चे तेल की हिस्सेदारी 97 प्रतिशत से घटकर 88 प्रतिशत हो गई। उद्योग निकाय ने कहा कि 1 नवंबर तक विभिन्न बंदरगाहों पर 24.08 लाख टन खाद्य तेल का स्टॉक होने का अनुमान है।

कब सस्ता होगा प्याज, क्या कह रही सरकार?

परिवहन विशेष न्यूज

फेस्टिव सीजन के बाद भी प्याज की कीमतों में नरमी देखने को नहीं मिली। इस साल मानसून के बाद से इनकी कीमतों में तेजी जारी है। ऐसे में आम जनता प्याज की कीमतों में कमी आने का इंतजार कर रही है। प्याज की कीमतों को लेकर सरकारी अधिकारी ने कहा कि खरीफ फसल में उपजे प्याज जब बाजार में पहुंच जाएंगे तो इनकी कीमत कम हो सकती है।

नई दिल्ली। सब्जियों के बढ़ते दाम से आम जनता को लगातार झटका लग रहा है। खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमत के कारण अक्टूबर में खुदरा महंगाई दर आरबीआई के दायरे से बाहर चली गई। अक्टूबर में रिटेल इन्फलेशन 6.21 फीसदी रही जो 14 महीने का उच्चतम स्तर है। ऐसे में अब प्याज की कीमतों को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है।

जुलाई महीने के बाद से प्याज की बढ़ती कीमतों से अब जल्द ही राहत मिल सकती है। कंज्यूमर अफेयर मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कुछ दिनों में प्याज की कीमतों में नरमी देखने को मिल सकती है। बाजार में खरीफ फसल के उतरने के बाद प्याज की कीमतों में गिरावट आ सकती है। दरअसल, इस साल रबी फसल में प्याज का प्रोडक्शन कम होने और मानसून में प्याज की फसल बरबाद होने के कारण इसकी कीमतों में तेजी आई थी।

सब्सिडी सेल से मिली मदद

सरकारी अधिकारी के अनुसार अभी देश भर में प्याज की खुदरा कीमत लगभग 54 रुपये प्रति किलो है। यह कीमत पिछले एक महीने में काफी कम हुई है। दरअसल, सरकार ने अक्टूबर में सब्सिडी रेट पर प्याज बेचने का फैसला लिया था। सरकार ने बफर स्टॉक में रखें प्याज को 35 रुपये प्रति किलोग्राम के सब्सिडी रेट पर बेचना शुरू किया था। यह फैसला प्याज की बढ़ती कीमतों को कंट्रोल करने के लिए लिया गया।

सरकार के पास प्याज का 4.5 लाख टन बफर स्टॉक है। इसमें से 1.5 लाख टन प्याज की बिक्री हो गई है। सरकार प्याज की कीमतों को कंट्रोल करने के लिए सप्लाई की ओर ध्यान दे रही है। इसके लिए सरकार पहली बार रेलवे के माध्यम से बफर स्टॉक प्याज की सप्लाई करेगी। रेलवे अधिकारी ने जानकारी दी कि वह रेलवे द्वारा जारी सप्लाई तब तक चालू रखेंगे जब तक प्याज की कीमत कंट्रोल में न हो जाए।

पिछले एक हफ्ते में सरकार ने रेल के जरिये 4,850 टन प्याज की सप्लाई की थी। यह सप्लाई दिल्ली, चेन्नई और गुवाहटी में हुई है। वहीं दिल्ली के कई मंडियों में 3,170 टन प्याज की सप्लाई हुई है। Nafed ने उम्मीद जताई है कि कल तक दिल्ली में 730 टन प्याज की सप्लाई रेल रैक के जरिये होगी।

फेस्टिव सीजन में क्यों महंगा हुआ प्याज

फेस्टिव सीजन और उसके बाद भी प्याज की कीमतों में अचानक तेजी आई। इस तेजी को लेकर सरकारी अधिकारी ने कहा कि मंडी में बंद रहने और फेस्टिवल सीजन में मजदूरों की छुट्टी के कारण प्याज की कीमतों में तेजी आई। हालांकि, अब इनकी कीमतों में नरमी आनी शुरू हो गई है और जल्द ही स्थिति में सुधार होगा। इसके अलावा अधिकारी ने उम्मीद जताई है कि खरीफ फसल में प्याज का प्रोडक्शन अच्छा रहेगा।

कितने में मिलता है बुलडोजर, किन कामों के लिए होता है इस्तेमाल?

बुलडोजर का ज्यादातर कमर्शियल यूज होता है। लेकिन भारत में यह सियासती कारणों से भी खूब चर्चा रहता है। कई लोग बुलडोजर और जेसीबी को एक ही समझते हैं पर ऐसा है नहीं। आइए जानते हैं कि बुलडोजर का इस्तेमाल किन कामों के लिए होता है इस सेक्टर की सबसे बड़ी कंपनी कौन है और इसकी कीमत कितनी होती है।...

नई दिल्ली। बुलडोजर का दुनियाभर में व्यावसायिक इस्तेमाल होता है। लेकिन, भारत में बुलडोजर का जिक्र व्यवसाय के साथ सियासत में खूब होता है। सोशल मीडिया पर बुलडोजर के खूब चर्चे रहते हैं। लेकिन, क्या आपको पता है कि बुलडोजर इंडस्ट्री में किस कंपनी की तूती बोलती है? इसकी कितनी कीमत होती है, इसका इस्तेमाल किस चीज के लिए सबसे अधिक होता है?

कितनी तरह के होते हैं बुलडोजर

बुलडोजर का असली नाम बैकहो लोडर (Backhoe Loader) है। अगर साइज की बात करें, तो बुलडोजर कई तरह के होते हैं। छोटे, मध्यम या फिर बड़े आकार के। बुलडोजर अपनी खूबियों के हिसाब से काफी अलग-अलग भी होते हैं। जैसे कि ट्रैक बुलडोजर, व्हील बुलडोजर, मिनी बुलडोजर और हाइड्रोलिक बुलडोजर।

बुलडोजर का इस्तेमाल

बुलडोजर का ज्यादातर इस्तेमाल कंस्ट्रक्शन सेक्टर में होता है। इससे जमीन समतल की जाती है। मिट्टी-पत्थर को हटाया जाता है। मलबा साफ किया जाता है। जरूरत पड़ने पर खुदाई और वृक्षारोपण भी किया जाता है। बुलडोजर कई दफा राहत कार्यों में भी काफी अहम भूमिका निभाता है। इसका इस्तेमाल अवैध निर्माण को गिराने के लिए भी किया जाता है।

जेसीबी कैसे बन गई 'बुलडोजर'

बुलडोजर के साथ सबसे पहला नाम दिमाग में आता है, जेसीबी। कई लोग बुलडोजर और जेसीबी को एक ही समझ लेते हैं। लेकिन, ऐसा है नहीं। बुलडोजर एक हेवी मशीन है और जेसीबी उसे बनाने वाली कंपनी का नाम। जैसे कि कई लोग ऑनलाइन पेमेंट को कहते हैं कि पेटीएम कर दीजिए। लेकिन, पेटीएम सिर्फ एक कंपनी है, पेमेंट तो यूपीआई के जरिए होता है।

JCB अब भारतीय कंपनी है, लेकिन इसकी नींव विदेशी जमीन पर पड़ी। इसके फाउंडर थे ब्रिटेन के जोसेफ सिरिल बैमफोर्ड और उनके नाम का शॉर्ट फॉर्म बना JCB। 1979 में कंपनी ने ज्वाइंट वेंचर के तौर पर इंडिया में मैन्युफैक्चरिंग शुरू की। भारत में यह जेसीबी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नाम से कारोबार करती है, जिसका मालिकाना हक ब्रिटेन की JC बैमफोर्ड एक्सकेवेटर्स के पास है।

बुलडोजर इंडस्ट्री की अन्य कंपनियां

Tata Hitachi, BEML Limited, ACE कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट और महिंद्रा कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट भी बुलडोजर बनाती हैं। इनमें से BEML Limited सरकारी कंपनी है, जो रक्षा मंत्रालय के तहत आती है। इन सभी कंपनियों के देश के अलग-अलग हिस्सों में मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं। ये भारत से दुनिया के दूसरे देशों में बुलडोजर को निर्यात भी करती हैं।

बुलडोजर का कितनी होता है दाम?

अगर बुलडोजर की कीमत की बात करें, तो यह ब्रांड, मॉडल और साइज पर निर्भर होती है। इसका दाम 15 लाख रुपये से लेकर डेढ़ करोड़ रुपये तक हो सकता है। वहीं, यूज्ड बुलडोजर अपनी लाइफसाइकल के हिसाब से सस्ता मिल सकता है। कई प्लेटफॉर्म बुलडोजर को किराये पर भी ऑफर करते हैं। बेमल डी80ए8 डोजर किराये पर लेने की कीमत लगभग 1,800 रुपये प्रति घंटे तक हो सकती है।

बुलडोजर एक्शन पर सुप्रीम कोर्ट की बड़ी चेतावनी कहा "अपराध की सजा घर तोड़ना नहीं" लगाई रोक

रितेश राव

सुप्रीम कोर्ट ने कानूनी प्रक्रिया अपनाए बिना बुलडोजर से घर गिराए जाने के खिलाफ दाखिल हुई याचिका पर फैसला सुनाते हुए कड़ी नाराजगी जताई तथा इसे कानून का उल्लंघन बताया है. शीर्ष न्यायलय ने कहा कि आरोपी पर दोष बनता है या नहीं, या उसने क्या अपराध किया है ये तय करना कोर्ट का काम है. अफसर अदालत की तरह काम नहीं कर सकते है. किसी भी मामले में आरोपी की गलती की सजा उसके परिवार को नहीं दी जा सकती. ऐसे मामलों में पक्षपातपूर्ण रवैया भी नहीं अपनाना जा सकता है.

जस्टिस बीएस गवई और जस्टिस विश्वनाथन की बेंच ने यह भी कहा की संविधान में आरोपियों को भी अधिकार दिए गए है. यदि दोषी पर अपराध सिद्ध हो जाता है फिर भी उसका घर नहीं गिराया जा सकता. सुप्रीम कोर्ट ने इसे लेकर नई गाइडलाइन भी जारी कर दी है. कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि किसी के भी घर को तब तक नहीं गिराया जा सकता, जब तक उसके मालिक को 15 दिन पहले नोटिस न दिया जाए. कोर्ट ने कहा कि यह नोटिस मालिक को डाक के द्वारा भेजा जाएगा. नोटिस में अवैध निर्माण की प्रकृति, उल्लंघन का विवरण और विध्वंस के कारणों को स्पष्ट रूप से बताया जाएगा. न्यायलय ने कहा कि गाइडलाइन का उल्लंघन करने पर अफसरों पर अवमानना की कार्रवाई की जाएगी एवं आदेश देने वाले अफसर से इसका भुगतान करने के लिए भी कहा जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का लगभग सभी विपक्षी दलों ने स्वागत किया है. यूपी के कानपुर में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा की बुलडोजर इस सरकार का प्रतीक बन चुका था. मैं सरकार के खिलाफ इस फैसले के लिए सुप्रीम कोर्ट को धन्यवाद देता हूं. जो लोग घर तोड़ना जानते हैं, उनसे आप कोई उम्मीद नहीं कर सकते हैं. कम से कम आज उनका बुलडोजर गैराज में खड़ा रहेगा, अब किसी का घर नहीं टूटेगा. हमें कोर्ट पर पूरा भरोसा है, एक दिन हमारे विधायक रिहा होकर हमारे बीच आएंगे और पहले की तरह काम करेंगे."

बसपा अध्यक्ष मायावती ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा, "बुलडोजर से ध्वस्तीकरण के सम्बन्ध में माननीय उच्चतम न्यायालय के आज के निर्णय व उससे सम्बन्धित सख्त दिशा-निर्देशों के बाद उम्मीद की जानी चाहिए कि यूपी व अन्य राज्य सरकारें जनहित व कल्याण का समुचित व सुचारू ढंग से प्रबंधन करेंगी तथा बुलडोजरों का आतंक अब निश्चित रूप से समाप्त हो जाएगा."

प्रबंध विद्यार्थियों के लिए विशेषज्ञ सत्र का आयोजन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। संगम विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय द्वारा विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण विशेषज्ञ सत्र का आयोजन किया जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और वर्तमान कारोबारी परिवर्तनों के संदर्भ में नवीनतम रुझानों से अवगत कराना था।स्वागत उद्बोधन में उप अधिष्ठाता डॉ. मुकेश शर्मा ने विश्वविद्यालय के प्रबंध विभाग द्वारा किए गए नवाचारों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने अपने वक्तव्य में कहा कि डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन आज के समय में प्रबंध के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय बन चुका है। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे इस डिजिटल परिवर्तन के अवसरों को पहचानें और इसका लाभ उठाने के लिए तत्पर रहें।उप कुलपति प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही ने कहा कि यह सत्र विद्यार्थियों के लिए प्रबंध में नए अवसरों को लेकर केंद्रीय है। उन्होंने विद्यार्थियों से यह अपेक्षाएँ व्यक्त की कि वे इस सत्र से प्राप्त ज्ञान को अपनी व्यावासिक रणनीतियों में समाहित करें, जिससे वे भविष्य में सफलता हासिल कर सकें।

कुल सचिव प्रोफेसर राजीव मेहता ने इस सत्र का महत्व बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ऐसे सत्र बेहद कारगर साबित होंगे।

इस सत्र के मुख्य वक्ता निरमा विश्वविद्यालय के प्रबंध विभाग के प्रोफेसर नितेश भट्ट ने विद्यार्थियों को आधुनिक अर्थव्यवस्था में हो रहे तेजी से बदलावों के बारे में बताया और कहा कि यह परिवर्तन कई नवाचारों को लेकर आएगा। उन्होंने डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की और विद्यार्थियों को बताया कि इस बदलाव के दौरान कौन से नए अवसर सामने आ सकते हैं।कार्यक्रम का संयोजन डॉ नेहा सब्बरवाल ने किया।इस अवसर पर संकाय के सदस्य डॉ सुरभि बिरला, डॉ तनुजा सिंह, छात्र मौजूद रहे।

भाजपा राज में ओडिशा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था ध्वस्त : समाजवादी पार्टी ओडिशा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर, भाजपा राज में ओडिशा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दुखद तस्वीर देखने को मिलरहा है। सबका साथ सबका विकास का नारा अब भाजपा का साथ लोगो का विनाश में बदल रहा है। जरूरी वस्तुओं की कीमतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। सरकारी नौकरी और शहरी अमीर लोग में जहां कीमतों में बढ़ोतरी की कोई प्रभाव नेही पड़ रहा हैं, वहीं ग्रामीण लोगों को ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस मुद्दे को लेकर समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शिव हाथी ने भाजपा सरकार की कड़ी आलोचना की है और आरोप लगाया है कि भाजपा सरकार आम आदमी पर सरकार जीजिया कर लगा रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा जारी मुद्रा सप्रिंति के आंकड़ों से कुछ ऐसे आंकड़े सामने आए हैं! अक्टूबर में ओडिशा की ग्रामीण मुद्रास्फीति दर बढ़कर 8.23 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है, जो ओडिशा के बाद एक दशक में दूसरी सबसे अधिक है, जहां ग्रामीण मुद्रास्फीति दर 9.70 प्रतिशत है।

ओडिशा की ग्रामीण महंगाई दर 8.23%

दशक में दूसरी सबसे ऊंची

बाजार की कड़ी निगरानी

बितरण विभाग की भूमिका पर सवाल

इस साल सितंबर में ओडिशा की महंगाई दर 6.56 फीसदी थी। अक्टूबर में यह बढ़कर 7.51 फीसदी हो गई। सितंबर में ग्रामीण और शहरी महंगाई दर क्रमशः 27.03 फीसदी और 5.23 फीसदी थी। अक्टूबर में ग्रामीण महंगाई दर बढ़कर 8.23 फीसदी और शहरी इलाकों में 5.58 फीसदी हो गई। दोनों महीनों की तुलना करने पर जो बात सामने आती है, वह यह है कि शहरी इलाकों में कीमतों में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है, लेकिन ग्रामीण इलाकों में कीमतों में भारी बढ़ोतरी हुई है। शहरी इलाकों में लोग आमतौर पर पैकेट में बिकने वाली चीजों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ग्रामीण लोग कृषि उत्पादों पर निर्भर हैं और ऊंची कीमतों का मतलब है कि ग्रामीणों के पास घर चलाने के लिए पर्याप्त कृषि उत्पाद नहीं हैं।

सामोन को ऊंची कीमतों पर चीजें खरीदनी पड़ती हैं। पिछले अक्टूबर में खाद्य एवं पेय पदार्थ, पेय पदार्थ, तंबाकू एवं मादक पेय पदार्थ, कपड़े, जूते, आवास, ईंधन एवं बिजली महंगी हो गई। खाद्यान्न, सब्जियां, खाद्य तेल, दालें, आटा के दाम भी बढ़ गए हैं। नतीजतन लोगों को खुदरा बाजार में अधिक खर्च करना पड़ रहा है। इस महीने महंगाई दर बढ़कर 6.21 प्रतिशत हो गई है। यह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित 6 प्रतिशत की सीमा को पार कर बेलगाम में है। कुछ दिन पहले रिजर्व बैंक ने स्थिति को लेकर चिंता जताई थी। उसका अनुमान सही साबित हुआ है। खाद्यान्नों, खासकर सब्जियों के दाम बढ़ने से... अक्टूबर में भारत की खुदरा महंगाई दर बढ़कर 6.21 प्रतिशत पर पहुंच गई जो 14 महीने का उच्चतम स्तर है। सब्जियों के दाम पूर्व वर्ष के मुकाबले 42.18 प्रतिशत बढ़े, जबकि फलों के दाम 8.43 प्रतिशत और दाल के दाम 7.43 प्रतिशत बढ़े। ग्रामीण इलाकों में बढ़ती महंगाई बताते हैं कि सरकार का बाजार पर कोई नियंत्रण नहीं है। बितरण विभाग का फ़्लाइंग स्क्वाड निष्क्रिय हो गया है। राज्य अपनी अधिकांश ज़रूरतें आयात से पूरी करता है, स्थायी समाधान खोजने में राज्य सरकार की कोई दिलचस्पी नहीं है। राज्य के भीतर विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ कृषि उपज को संग्रहीत करने के लिए आवश्यक कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं की स्थापना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। किसानों को फसल के समय बिक्री कम होने का सामना करना पड़ता है, वहीं कालाबाज़ारी करने वाले व्यापारी मुनाफ़ा कमा रहे हैं।

वरिष्ठ समाजसेवी एवं सामाजिक चिंतक मुशरफ खान : सादगी और समाज सेवा की मिसाल

आगरा,संजय साग़र सिंह। वरिष्ठ समाजसेवी एवं सामाजिक चिंतक मुशरफ खान उत्तर प्रदेश की एक ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपनी माँ की दुआओं और आशीर्वाद से समाजसेवा कर हज़ारों दिलों में जगह बनाई हैं और बिजनेस से लेकर सामाजिक कार्यों तक, मुशरफ खान ने हमेशा लोगों को प्रेरित किया है। उनकी कहानी न सिर्फ एक बिजनेसमैन की है, बल्कि एक मजबूत और समझदार पुरुष की भी है, जिन्होंने अपने काम और समाज के प्रति जिम्मेदारी को हमेशा प्राथमिकता दी है।

हमारे संवाददाता संजय साग़र सिंह से अपने क़ीमती समय में से कुछ वक़्त निकालकर वरिष्ठ समाजसेवी एवं सामाजिक चिंतक मुशरफ खान ने आपने जीवन, संघर्ष और सफलता के बारे में बहुत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक बातें साझा की। यह सच है कि समय की प्रबंधन की अहमियत को समझते हुए हम अपने जीवन में सफलता पा सकते हैं। उनके विचारों में यह स्पष्ट होता है कि नतीजे केवल बाहरी सफलता नहीं होते, बल्कि असल सफलता खुद को बेहतर बनाते हुए निरंतर प्रयास करने में छिपी होती है। सही समय पर निर्णय लेना, अपने विचारों की देखभाल करना और आत्म-नियंत्रण रखना ये सब सफल व्यक्ति के गुण होते हैं। जैसे उन्होंने बताया, असली अमीर वह नहीं है जो ज्यादा कमाता है, बल्कि वह है जो कमाए हुए धन को संभाल पाता है।

बुरे वक्त से हम कुछ नया सीख सकते हैं और, और भी बेहतर इंसान बन सकते हैं,

उन्होंने बुरे वक्त को एक अवसर के रूप में देखा है, जिससे हम कुछ नया सीख सकते हैं और, और भी बेहतर इंसान बन सकते हैं। यही दृष्टिकोण हमें मजबूत बनाता है और जीवन के किसी भी मोड़ पर हमें संघर्ष का सामना करने की ताकत देता है। उनकी यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि ₹बदलना₹ नहीं, ₹बेहतर होना₹ जरूरी है। जीवन में सफलता की दिशा में कदम बढ़ाते हुए अगर हम खुद को हर दिन थोड़ा बेहतर बना पाते हैं, तो यही हमारी सबसे बड़ी जीत होती है।

शुरुआत: छोटे शहर के लड़के से बिजनेस मैन तक

मुशरफ खान का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। शुरुआत में उन्होंने मजदूरी से काम किया, लेकिन अपने संघर्ष और मेहनत से उन्होंने बिजनेस की दुनिया में कदम रखा। माँ की दुआओं और उनकी मेहनत और ईमानदारी ने उन्हें एक नेक और सफल बिजनेसमैन बना दिया। उनके द्वारा किए गए समाजसेवी कार्य हमेशा लोगों के दिलों में बस गए हैं, जिनमें उनकी नेकी और सादगी झलकती है।

निजी जीवन: परिवार और सादगी,

मुशरफ खान का निजी जीवन भी उनकी सादगी और समर्पण का उदाहरण है, उनका एक प्यारा परिवार। मुशरफ खान अपने परिवार के साथ समय बिताने को बेहद महत्व देते हैं। वह हमेशा अपने बच्चों और पत्नी के साथ समय बिताते हुए जीवन के हर पहलू में संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं। उनका जीवन यह साबित करता है कि एक व्यक्ति अपने करियर, परिवार और समाज के लिए जिम्मेदारी निभाते हुए भी संतुलन बना सकता है।

मुशरफ खान का व्यापारिक और सामाजिक सफर एवं व्यवसाय और समाज सेवा में नई दिशा,

मुशरफ खान का जीवन केवल बिजनेस तक सीमित नहीं है। उन्होंने बिजनेस में भी एक नई दिशा बनाई हैं, जहां उन्होंने केवल आर्थिक लाभ के बजाय समाज और पर्यावरण के लिए भी काम किया। वह जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाते रहते हैं। उनके द्वारा चलाए गए प्लास्टिक के खिलाफ अभियान और वृक्षारोपण जैसी पहलें उनकी खास पहचान बन चुकी हैं।

मुशरफ खान का समाज पर प्रभाव,

मुशरफ खान न सिर्फ एक सफल बिजनेसमैन हैं, बल्कि उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों से यह सिद्ध कर दिया कि असली सफलता पैसे और नाम से नहीं आती, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने से मिलती है। उनके जीवन में यही सिद्धांत है – समाज सेवा और जिम्मेदार नागरिकता को प्राथमिकता देना। मुशरफ खान ने यह साबित कर दिया है कि सफलता केवल एक दिशा में नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में हो सकती है – चाहे वह बिजनेस हो, परिवार हो या समाज सेवा। हमें

श्री खान का जीवन यह सिखाता है कि यदि हम दिल से कुछ करें, तो दुनिया को बदलने की ताकत हम खुद में पा सकते हैं। उनकी सादगी, मेहनत और समाज के प्रति निष्ठा हमेशा हमें प्रेरित करती रहेगी और उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि सफलता सिर्फ बाहरी चीजों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह हमारी मानसिकता, दृष्टिकोण और आत्म-प्रेरणा पर भी निर्भर करती है।

तुलसी विवाह कार्यक्रम सम्पन्न

हैदराबाद। ओल्ड बोईनपल्ली स्थित उत्तराखंड अल्मोड़ा वासी सुंदर जी / ऊषा जी के निवास पर तुलसी विवाह और शालिग्राम पूजन के अनुष्ठान पर उत्तराखंड की कीर्तन मंडली आर के पूरम की माताओं द्वारा सुंदर भजन कीर्तन किया गया।. इस अवसर पर श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन जयपाल नयाल सनातनी सहपरिवर मजन पूजन में शामिल हुए ।

मणिपुर में उग्रवादियों के एनकाउंटर के बाद बिगड़े हालात, केंद्र ने संभाला मोर्चा; तुरंत भेजे दो हजार जवान

मणिपुर में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में कम से कम 10 उग्रवादी मारे गए थे। ताजा हालात को देखते हुए केंद्र सरकार ने 20 अतिरिक्त सीएपीएफ कंपनियों को मणिपुर भेजा है। इन कंपनियों में दो हजार कर्मी शामिल हैं। सूत्रों के अनुसार सीएपीएफ की जिन 20 कंपनियों को मणिपुर में तैनाती का आदेश दिया गया है उनमें 15 सीआरपीएफ की और पांच बीएसएफ की हैं।

नई दिल्ली। मणिपुर में ताजा हमलों और कानून-व्यवस्था के मद्देनजर केंद्र ने करीब 2,000 कर्मियों वाली 20 अतिरिक्त सीएपीएफ कंपनियों को राज्य में भेजा है। गृह मंत्रालय ने मंगलवार रात को इन इकाइयों को हवाई मार्ग से लाने और तत्काल तैनाती के आदेश जारी किए। गौरतलब है कि सोमवार को सीआरपीएफ के साथ भीषण मुठभेड़ में 10 उग्रवादी मारे गए। यह मुठभेड़ तब हुई जब वर्दी पहने और अत्याधुनिक हथियारों से लैस उग्रवादियों ने जिरीबाम जिले के जाकुरधोर में बोरोबेक्रा पुलिस स्टेशन और उससे सटे सीआरपीएफ कैंप पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी थी। भीषण मुठभेड़ के बाद बल ने अत्याधुनिक हथियारों का एक बड़ा जखीरा भी जब्त किया था।

नेताओं बिगड़ रहे हैं बोल

नेताओं के तो बिगड़ रहे हैं बोल,
वह सिर्फ बजा रहे हैं झूठे ढोल।
उद्धव तो हेलीकॉप्टर चेकिंग पर,
ज़बरदस्त लाल-पीले हो रहें हैं।
खींझ मोदी-शाह पर निकाल रहें हैं।

नेताओं के तो बिगड़ रहे हैं बोल,
वह सिर्फ बजा रहे हैं झूठे ढोल।
नाना न जाने कौन गाना गा रहे हैं,
अब अपनी पिछली पार्टी को ही वे!
देखों (भाजपा को)कुत्ता बता रहे हैं।

नेताओं के तो बिगड़ रहे हैं बोल,
वह सिर्फ बजा रहे हैं झूठे ढोल।
देवेंद्र भी खूब आक्रामक हो रहे हैं,
दानवे कार्यकर्ता को लात मार रहे!
बेचारे कार्यकर्ता खाट पकड़ रहे हैं।

नेताओं के तो बिगड़ रहे हैं बोल,
वह सिर्फ बजा रहे हैं झूठे ढोल।
अजीत खोल रहे हैं चाचा की पोल,
महायुति में न कटेंगे-बटेंगे मत बोल
ओवैसी का महाराष्ट्र में क्या है रोल।

संजय एम. तराणेकर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023